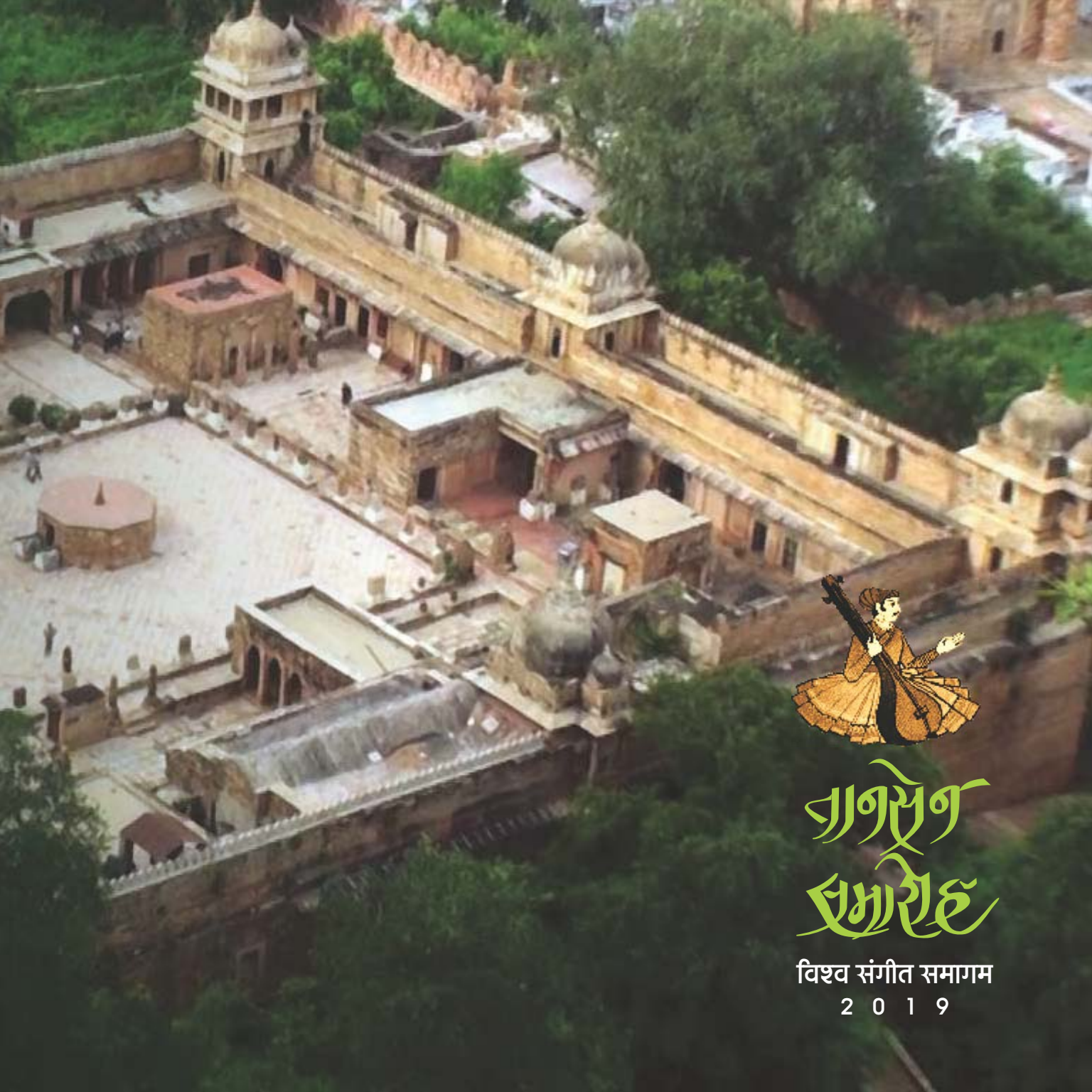

तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम

2019

विश्व संगीत समागम

तानसेन समारोह

2019

17 से 21 दिसम्बर, 2019
तानसेन समाधि परिसर, हजीरा, ग्वालियर

---

17 दिसम्बर
प्रातः 10 बजे
हरिकथा, मीलाद एवं शहनाई वादन
ढोलीबुवा महाराज
कामिल हज़रत, मजीद खाँ एवं साथी

शुभारम्भ
तानसेन समारोह सायं 7 बजे
अलंकरण
राष्ट्रीय तानसेन सम्मान
पण्डित विद्याधर व्यास, मुम्बई

राजा मानसिंह तोमर राष्ट्रीय सम्मान
निनासम, हेग्गोडु (कर्नाटक)

17 दिसम्बर
माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
विद्याधर व्यास, मुम्बई सम्मानित कलाकार
मोईनुद्दीन खाँ, जयपुर-सारंगी
प्रेम कुमार मलिक, प्रयागराज-ध्रुपद गायन

प्रातः कालीन सभाएँ
10 बजे से

18 दिसम्बर
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला
विश्वविद्यालय, ग्वालियर -ध्रुपद गायन
रसिका अभिषेक गावड़े, इन्दौर-गायन
श्रुति अधिकारी एवं साथी, भोपाल-पंचनाद
सागर मोरानकर, कोलकाता-ध्रुपद गायन
मीता पण्डित, नई दिल्ली-गायन
लौकिया वालासी, स्टेला वालासी,
ग्रीस-गायन-संतूरी (विश्व संगीत)

19 दिसम्बर
भारतीय संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
जयवन्त गायकवाड़, ग्वालियर-पखावज
सोनल शिवकुमार, मुम्बई-गायन
सुधाकर देवले, उज्जैन-गायन
सलीम अल्लाहवाले एवं साथी, भोपाल-ताल सप्तक

20 दिसम्बर
ध्रुपद केन्द्र, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
ली फेंगयुन, चीन-गुचिन (विश्व संगीत)
महेश दत्त पाण्डे, ग्वालियर-गायन
रामचंद्र भागवत, वाराणसी-वायोलिन
अपूर्वा गोखले-पल्लवी जोशी, मुम्बई-युगल गायन

21 दिसम्बर, बेहट
तानसेन संगीत कला केन्द्र, बेहट -ध्रुपद गायन
संजुक्ता दास, कोलकाता-गायन
अली अहमद खाँ, ग्वालियर-सारंगी
प्रज्ज्वल शिर्के, ग्वालियर-गायन

सायंकालीन सभाएँ
7 बजे से

18 दिसम्बर

तानसेन संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
अब्दुल सलाम नौशाद, इन्दौर-क्लेरोनेट
अभिजीत सुखदाणे, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
उमायलपुरम के. शिवरमन, चैन्नई-मृदंगम्
मोहन देशपाण्डे, यू.एस.ए.-गायन

19 दिसम्बर

शंकर गांधर्व महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
सियावस इमानी, पेइ्रम खावर जामिनी,
आमिर खैरी, ईरान-तार, टुम्बक (विश्व संगीत)
अजय पोहनकर, मुम्बई-गायन
नित्यानंद हल्दीपुरकर, मुम्बई-बांसुरी
नरेश मल्होत्रा, नई दिल्ली-गायन

20 दिसम्बर

साधना संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर -ध्रुपद गायन
मीर गैसेनबावर, अमित मीनाखेम, ऐरन जमीर,
इज़राईल- नेय, परकशन, ऊद (विश्व संगीत)
जान्हवी फनसालकर, भोपाल-ध्रुपद गायन
कौशिकी चक्रवर्ती, कोलकाता-गायन
नरेन्द्रनाथ धर, कोलकाता-सरोद

21 दिसम्बर, गूजरी महल

सारदा नाद मंदिर, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
हेलिना सूटर्स, बियेतरेज, बेल्जियम गायन-गिटार (विश्व संगीत)
जयश्री सबागुंजी, भोपाल-गायन
सुजाता गुरव, धारवाड़-गायन
मीता नाग, कोलकाता-सितार

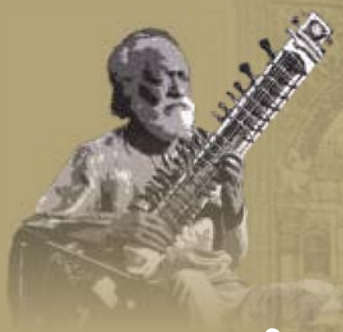

प्रणति

भारत रत्न पंडित रविशंकर
के 100वें जन्मवर्ष के अवसर पर
छायाचित्र प्रदर्शनी

17 से 20 दिसम्बर 2019
तानसेन समारोह स्थल

वादी संवादी

राजा मानसिंह तोमर संगीत कला विश्वविद्यालय
सायं 4 से 6 बजे तक

सोदाहरण व्याख्यान

19 दिसम्बर	20 दिसम्बर
शुभेन्दु राव	**उमाकांत गुन्देचा एवं अनंत रमाकांत गुन्देचा**
सितार	ध्रुपद

संगतकार

तबला-अकरम खाँ, मनीष खरगौनकर, हितेन्द्र दीक्षित, चिन्तेश पाटीदार, किरण देशपाण्डे
रामेन्द्र सिंह सोलंकी, अनिल मोघे, उल्हास राजहंस, मनोज पाटीदार, अनंत मसूरकर
पुण्डलिक भागवत, संदीप, विकास विपट, हितेन्द्र श्रीवास्तव, अंशुल प्रताप सिंह
परवावज-मृणाल उपाध्याय, संजय आगले, अनुजा बोरोड़े
हारमोनियम-रचना पौराणिक शर्मा, जमीर हुसैन, जितेन्द्र शर्मा, विवेक जैन, विवेक बंसोड़
अब्दुल सलीम खान, सुरेश कुमार राय, पारोमिता मुखर्जी, संजीव कुमार सिन्हा
सारंगी-कमाल एहमद, अब्दुल हमीद खाँ, आबिद हुसैन, अब्दुल मजीद खान
वायोलिन- सुभाष देशपाण्डे
ताल- एन. हरिहरण

तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम

मध्यप्रदेश सांगीतिक विरासत से समृद्ध है। यहाँ संगीत के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन के लिए निरन्तर प्रयास किये जाते रहे हैं। नौ दशकों से अधिक समय से आयोजित हो रहा तानसेन समारोह स्वयं इसका प्रमाण है। संगीत सम्राट तानसेन की हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अप्रतिम साधना के सामने सभी नत-मस्तक हैं। संगीत के महान साधक को विनयांजलि अर्पित कर संगीतज्ञ स्वयं को धन्य एवं सौभाग्यशाली मानते हैं। इन अद्भुत क्षणों के साक्षी बनकर सुधी श्रोता भी गौरवान्वित होते हैं। संगीत की अविरल-धारा का यह विश्व संगीत समागम निःसंदेह अनूठी और अविस्मरणीय छवि का द्योतक होगा। इस अवसर पर हम भारत रत्न पण्डित रविशंकर के 100वें जन्मवर्ष के अवसर पर विशेष छायाचित्र प्रदर्शनी भी आयोजित कर रहे हैं जो सभी को रुचिकर होगी। इसी विश्वास के साथ सभी को शुभकामनाएँ।

डॉ. विजयलक्ष्मी साधौ
मंत्री
संस्कृति, चिकित्सा शिक्षा एवं आयुष
मध्यप्रदेश शासन

तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम

हिन्दुस्तानी संगीत की विशाल परम्परा में ग्वालियर घराने का अनूठा स्थान है। इसकी शुरुआत संगीत सम्राट मियाँ तानसेन से हुई और इस बार तानसेन समारोह 95वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस सुदीर्घ परम्परा को सहेजने सँवारने और सहभागी बनाने में देश के अनेक मूर्धन्य व युवा कलाकारों का योगदान अविस्मरणीय है। पिछले कुछ वर्षों में इसका स्वरूप वैश्विक हुआ है। अनेक देशों के कलाकारों ने यहाँ अपने देश के संगीत को प्रस्तुत किया और श्रोताओं ने इसका भरपूर स्वागत किया। इस वर्ष से इस समारोह में कर्नाटक संगीत भी शामिल हो रहा है। इस तरह से तानसेन समारोह वास्तव में संगीत का प्रतिनिधित्व करने वाला एकमात्र समारोह बनता जा रहा है।

तानसेन समारोह-2019 में शिरकत कर रहे सभी संगीतज्ञों एवं कलारसिकों को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए विश्वास है कि संगीत का यह समारोह अपनी शृंखला का अभूतपूर्व सोपान सिद्ध होगा।

अखिलेश
निदेशक

पण्डित भीमसेन जोशी

गुन्देचा बन्धु

मेरा ध्यान सुर या नाद या गायिकी पर ज़्यादा रहा है- पण्डित भीमसेन जोशी

आप समान रूप से सभी लोगों के बीच लोकप्रिय हैं। जो लोग संगीत कम जानते हैं वे भी आपका गाना बहुत पसन्द करते हैं और जो गुणी श्रोता और संगीतकार हैं वे भी आपको उतना ही मानते हैं। आपने अपनी गायिकी में यह तालमेल किस तरह बिठाया।

मैंने सदैव इस बात का ध्यान रखा कि गाते हुए मुझे स्वयं को आनन्द मिल रहा है या नहीं। शास्त्रीय संगीत से हमें विशुद्ध आनन्द प्राप्त होना चाहिये, तब ही हम श्रोताओं को भी वही आनन्द दे सकते हैं। श्रोताओं को जो भी आनन्द देता है, वे उसे ही तो प्यार करते हैं। गायिकी में शास्त्र, रियाज़ ये सभी चीज़ें तो अपनी जगह हैं ही लेकिन विशुद्ध आनन्द, यानि भगवान, की प्राप्ति सबसे महत्त्वपूर्ण है।

आज के कई गायक आपकी गायिकी की हू-ब-हू नक़ल करते हैं। एक गुरु के रूप में यह सब आपको कैसा लगता है ? क्या वे ठीक कर रहे हैं ?

किसी भी गायक की शुरुआत तो नक़ल से ही होती है। लेकिन बाद में कलाकार को अपनी सोच और चिन्तन से अपनी गायिकी को बनाना चाहिये। नक़ल ठीक नहीं क्योंकि हर व्यक्ति अपनी तरह का एक ही होता है।

देखा गया है कि आप महफ़िल में बहुत राग नहीं गाते हैं। ऐसा क्यों ? वैसे अगर आप चाहें तो कई राग गा सकते हैं।

मैं सदा से मानता आया हूँ कि महत्त्वपूर्ण यह है कि आप कैसे गाते हैं, बजाय इसके कि आप कितने राग गाते हैं।

आपकी गायिकी से किराना घराना न केवल समृद्ध हुआ है बल्कि आगे बढ़ा है। कुछ लोग मानते हैं कि आपने किराना घराने की गायिकी को बदल दिया। आप क्या सोचते हैं ?

यह तो हर एक पीढ़ी के साथ होता ही है। प्रत्येक कलाकार अपने ज़माने के तकाज़े से समकालीन कलाकारों के प्रभाव से अपनी

गायिकी को विशेष बनाता ही है। और इससे वह घराना समृद्ध ही होता है। लेकिन मैं यह ज़रूर कहूँगा कि मैं किराना घराने के मूल तत्त्व से कभी हटा नहीं।

ऐसा लगता है कि आपने नाट्य संगीत अपेक्षाकृत कम गाया। वैसे अभंग इत्यादि तो आपने बहुत गाये।

नहीं, ऐसी बात नहीं है। एक ज़माने में मैंने नाट्य संगीत बहुत गाया। और यहाँ तक कि मैंने अपनी जवानी में नाटक में काम भी किया है।

आपने जब ख़्याल गायन शुरू किया तब उस समय का गाना सुनकर उसमें आपको क्या कमी लगती थी ?

कमी तो नहीं कहूँगा, लेकिन गाने में इत्मीनान थोड़ा ज़्यादा था तो गाना-बजाना बहुत देर तक चलता था। मैंने इस प्रस्तुति में एडिटिंग की आवश्यकता को पहचाना और उस पर अमल किया। संगीत-सभाओं में और रिकार्डिंग्स दोनों में ही मैंने इस बात का ध्यान रखा कि केवल उन्हीं चीज़ों को प्रस्तुत किया जाये जो महत्त्वपूर्ण हों। मैं चाहता था, केवल समृद्ध सामग्री ही श्रोताओं के सामने लायी जाये।

आपका गाना सुनकर लगता है कि आप स्वर और उसकी ध्वनि और राग का ज़्यादा मज़ा लेते हैं बजाये शब्द के अर्थ के। ऐसा क्यों है ?

शब्द का मज़ा लेकर गाना, यानि `शब्द प्रधान गायिकी', अलग चीज़ है। आप कह सकते हैं कि मेरा ध्यान सुर या नाद या गायिकी पर ज़्यादा रहा है। लेकिन शब्द का स्थान तो अपनी जगह है ही।

आप राग के प्रस्तुतिकरण में बंदिश के महत्त्व को कितना मानते हैं ?

बंदिश का भी काफी महत्त्व है लेकिन बंदिश वैसी हो भी। जो बंदिशें सदियों से चली आ रही हैं और जो गुरुमुख से हमें मिली हैं, वे हमें सिद्ध मन्त्र के समान प्रतीत होती हैं। उसमें गायिकी के नये-नये रास्ते मिलते रहते हैं। इसलिये वे बहुत कीमती हैं। लेकिन ऐसा कम देखा गया है कि नयी बंदिशें उस कसौटी पर उतनी खरी उतरें।

पुराने गायकों में आपको किसकी गायिकी ज़्यादा पसन्द है ?

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब, मेरे गुरुजी-पण्डित सवाई गंधर्व-आदि तो हैं ही। साथ में उस्ताद अमीर खाँ साहेब, बाल गंधर्व, केसर बाई का भी मुझ पर प्रभाव रहा। और भी कई बुजुर्गों को मैंने सुना है। अभी किस-किस का नाम लूँ।

आपको ख्याल गायिकी में क्या पसन्द नहीं है ?

ख़्याल गायिकी में खानदानीपन छोड़ना मुझे पसन्द नहीं।

क्या आप ऐसा मानते हैं कि तानपुरा गाने वाले की कमियों को दिखाता है और हारमोनियम कमियों को छुपाता है ?

हमारे राग-संगीत के लिये तानपुरा तो बिलकुल आवश्यक है। आपका प्रश्न ही मेरा उत्तर भी है। लेकिन इतना ज़रूर है कि हारमोनियम कमियाँ कहाँ तक छुपायेगा, वो तो दिखेंगी ही।

'सुनता है गुरु ज्ञानी' से साभार

राग का इतिहास : एक विहंगम दृष्टि

मुकुन्द लाठ

बात सच है। हमारे यहाँ राग-संगीत ही एकमात्र संगीत नहीं है और न रहा है। हमारे विचार का क्षेत्र अगर राग-संगीत के बाहर भी जाये तो बहुत अच्छी बात होगी। राग-संगीत के लिए भी अच्छी बात होगी। क्योंकि विचार का धर्म ही है कि विचार अपने विषय को भीतर से ही नहीं बाहर से भी समझना परखना चाहता है- किसी भी विषय के स्वभाव स्वरूप का लक्षण उसके व्यावर्तकों के माध्यम से करता है। चाहें तो इसे अपोह का मार्ग कह लीजिये। यह वस्तु-विचार के केन्द्र में होता ही है। प्रकट ही है कि राग क्या है, इसे जानने के लिए राग क्या नहीं है, इसे जानना ज़रूरी है। हमारी आगे की चर्चा में भी इस प्रश्न पर अपनी तरह से विचार होगा। पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि ध्यान राग-संगीत से हटा दिया जाये- जैसा तात्पर्य कि आज के अपोहवादियों के स्वर में ध्वनित होता है।

भूलना नहीं चाहिए कि राग संगीत हमारी परम्परा का सबसे `उच्चाँग' संगीत रहा है। हमारी प्रतिभा की-सृजनशीलता की-गहरी से गहरी और सबसे अधिक आत्मचेतन डोर उसी से बँधी रही है। इसीलिए विचार और शास्त्र की परम्परा का भी वही सदियों से केन्द्र रहा है। हम इस शास्त्र-बोध के वलय को बढ़ायें, यह तो समझ में आता है पर उसे किसी लक्ष्मणरेखा जैसी परिधि से बाँधकर उसे अलग रख देना चाहें, यह कौन सी समझदारी है ? राग-भिन्न के प्रति हमारे बोध का तेवर मगर कुछ ऐसा ही सा जागता दीखता है।

यह चर्चा यहाँ इसलिए भी कर रहा हूँ क्योंकि यह बोध और यही तेवर राग तक ही सीमित नहीं है। संस्कृति मात्र पर व्याप्त है। `राग नहीं कुछ और' यह स्वर उसी स्वर का संवादी है जो कहता है `संस्कृति की पहली परम्परा को छोड़िये; दूसरी (तीसरी, चौथी...) भी है, उधर बढ़िये, उधर ही बढ़िये, उनमें पैठिये।' ऐसी बातों के पीछे एक असन्तोष है, आक्रोश है, जो समझ में आता है। हम संस्कृति को वैसा चाहते हैं जैसी वह हमें लगती नहीं है। हम उसे एक नयी धारा देना चाहते हैं। और इसका एक सुगम रास्ता यह झलकता है कि पुरानी किसी `गौण' मानी जाने वाली धारा को उभारा जाये जिसमें मनोवांछित गुण दिखाई देते हों। पर एक तो गौण और मुख्य की पहचान कोई एक अमोघ पहचान नहीं होती, इस पहचान में भी दृष्टि भेद हो सकता है- यह पहचान इतिहास-दृष्टि की बात है और इतिहास दृष्टि तो स्वभाव से ही बहुधा-विभक्त होती है। फिर बात यहाँ आकलन की है- जाँचने-परखने-आँकने की। किसी भी संस्कृति में यह काम जो धारा करती है, उसी को मुख्य कहा जाता है। आज का जो मानस दूसरी, तीसरी परम्पराओं की बात करता है, वह भी यही मान कर चलता है। यह मानस चाहता है कि हमारी विचार-बुद्धि का, आदर्श-बोध का आधार दूसरी, तीसरी... परम्परा हो। इस उद्दिष्ट परम्परा को अधिक `लोक'-निष्ठ माना जाता है, और साथ यह भी माना जाता है कि यह परम्परा `स्वस्थ' प्रतिभा के उन्मेष में स्वतन्त्र और मुखर है। पर आत्मबोध, आत्म-आकलन की वाणी में मूक। सृजनशील है पर शास्त्रहीन। यह बात हम पहली परम्परा में रहकर ही करते हैं। `पहली' कहलाने वाली परम्परा दृष्टि की परम्परा भी होती है। दूसरी, तीसरी, चौथी... की पहचान भी वही करती है, और उनका आकलन भी। लेकिन एक बात और है। किसी भी पुरानी, समृद्ध संस्कृति में आत्मचेतन परम्परा एक ही दृष्टि में निष्ठ नहीं होती। दृष्टि-भेद-गहरा से गहरा दृष्टि भेद-आत्मचेतना का सहज गुण

होता है। जिस दृष्टि-भेद की खोज में हम 'दूसरी' परम्परा की बात करते हैं, वह प्रकट पहली में ही होता है। क्योंकि दृष्टि-भेद वहाँ सहज है। 'दूसरी' में जो दृष्टि होती है, जो हमें आकर्षित करती है, वह दृष्टि अप्रकट होती है, ऊह्य या अन्तर्निहित रहती है, ऊहापोह में उजागर नहीं। उसे उजागर करना पड़ता है। एक बार वह उजागर हो जाये तो 'पहली' ही परम्परा को विस्तार देती हुई उसका अंग हो जाती है।

मैंने यह प्रसंग से बाहर लगती सी बात इसलिए भी उठायी है कि राग के इतिहास में हमें एक बड़ा निखरा हुआ ऐसा दृष्टान्त मिलता है, जहाँ दूसरी परम्परा पहली को विस्तार देती है। राग-लक्षण-शास्त्र के पहले ही ग्रन्थ में प्रकट है कि राग लोकनिष्ठ परम्परा की- 'दूसरी' परम्परा की- रूप-कल्पना को आधार बनाता है, उसे शास्त्र और सृजन का आत्मबोध देता है। इससे लोक और शास्त्र-निष्ठ राग, दोनों में एक नये चिन्तन और मन्थन का क्षितिज उभरता है। रागशास्त्र के पहले ग्रन्थ का नाम है, बृहद्देशी। 'देशी' शब्द यहाँ राग-संगीत के लिए प्रयुक्त है, जिसे लोक-परम्परानिष्ठ ही नहीं, स्वभाव-स्वधर्म से भी 'लौकिक' ही माना जाता था। 'बृहद्देशी' शब्द की अभिधा और ध्वनि को देखिए। अभिधा यह है कि देशी संगीत पर यह एक वृहत् ग्रन्थ है। देशी के विकीर्ण रूपों का एक विराट आकार है- विवरण, वर्णन, लक्षण है। ध्वनि यह है कि देशी की संकीर्णता को यह बृंहण देता है। उसकी बारह कोस की सीमा में बँधी 'बोली' को सार्वजनीन शास्त्र के 'मार्ग' पर लाता है- उसे ऐसा व्याकरण देता है कि वह सबकी बोली हो सके: सर्वदेश की प्रतिभा का आश्रय। इस बृंहण के विषय में बृहद्देशी की अपनी एक विलक्षण दृष्टि है- आलाप-दृष्टि-जिस पर हम आगे विचार करेंगे।

आज दूसरी परम्परा के बृंहण की बात तो होती है- पर देशी को बृहद्देशी का रूप दे, ऐसा कोई विचारसूत्र दिखाई नहीं देता। बात एक नारे जैसी ही जान पड़ती है। कारण शायद यह है कि हमारी विचार संस्कृति ही संकट में है। हमारी 'पहली' संस्कृति का आत्मबोध अपना नहीं है, परमुखापेक्षी है। पर अब बात को यहीं छोड़ता हूँ, आगे नहीं बढ़ाऊँगा। और प्रसंग-बाहर नहीं हूँगा।

पर प्रसंग-प्रवेश में फिर भी अवरोध आगे आता है। राग का इतिहास आँकने बैठा हूँ तो एक प्रश्न विषय प्रवेश के पहले चौखट पर ही टोक देता है। राग का इतिहास क्यों ? इसका प्रयोजन ही क्या है ? प्रश्न अटपटा लग सकता है। आज हमारे किसी भी विषय के आकलन में विषय का इतिहास विषय-विचार का एक अभिन्न अंग होता है। विषय-बोध में ही अन्तर्गूढ़ बुद्धि का आज कुछ ऐसा संस्कार है हमारा कि इतिहास के बिना हम समझते ही नहीं कि विषय का आकलन भी हुआ। कला में- जैसे साहित्य में या चित्रकला में- यह संस्कार हमारे विषयबोध के और भी केन्द्र में है। लेकिन है यह संस्कार ही। क्योंकि नहीं भी हो सकता था। कोई और संस्कार हो सकता था। सच पूछिये तो पहले बुद्धि का संस्कार कुछ और था ही। और एक गहरे अर्थ में अब भी है- संगीत में ही प्रकट है। चित्रकला में आज हमारा कलाबोध, उसके रूप, उसके परख की कसौटियाँ- ये बहुत कुछ पश्चिम-प्राण हैं। इसीलिए हम वहाँ भारतीयता की भी बड़ी व्यग्र खोज करते हैं। कलाबोध में इतिहास को बोध की नाभि पर रखना, यह संस्कार भी पश्चिम से ही आया है। हमारा राग-संगीत पश्चिम-प्राण नहीं है। वहाँ चिन्तन के संस्कार भी 'देसी' हैं। इतिहास की माँग नहीं करते। हम अपने ही भीतर झाँककर देखें तो बात को और अच्छा भाँप सकेंगे। हम चित्र देखते हैं तो यह अपेक्षा कौंधती रहती है कि चित्र के इतिहास में इसे कहाँ और कैसे रखें। तभी इसका 'मर्म' पकड़ में आता दीखता है। चित्रबोध में यह मानस सहज होता है। लेकिन वहीं हम जब चित्र से राग की ओर मुड़ते हैं तो इतिहास की अपेक्षा नहीं करते। उसका नहीं होना भी सहज होता है। हमारे लिए राग की परम्परा में सहृदयता की कसौटियाँ इतिहास को शामिल नहीं करतीं। इस बात को ध्यान में रखें तो 'इतिहास क्यों' यह प्रश्न अजीब नहीं लगेगा। उल्टे बुद्धि अपने संस्कार पर ही प्रश्न उठा सकती है कि आखिर किसी विषय-बोध के लिए उसके इतिहास बोध की ज़रूरत ही क्यों ? हम यह नहीं कह सकते कि हमारा चित्र-बोध हमारे संगीत-बोध से अधिक गहरा है- गहरा कहें भी तो यह नहीं कह सकते कि गहराई का कारण बोध में इतिहास का होना है। सच पूछिये तो थोड़ा अपने ही भीतर खोदकर, अपनी ही टोह लेकर देखने पर यह प्रश्न और भी व्यापक होकर उठता है कि इतिहास क्यों ? कला में ही नहीं बुद्धि के किसी भी विषय-बोध में उसकी सार्थकता क्या ?

लेख का यह अंश 'बहुवचन' अंक-1 से साभार

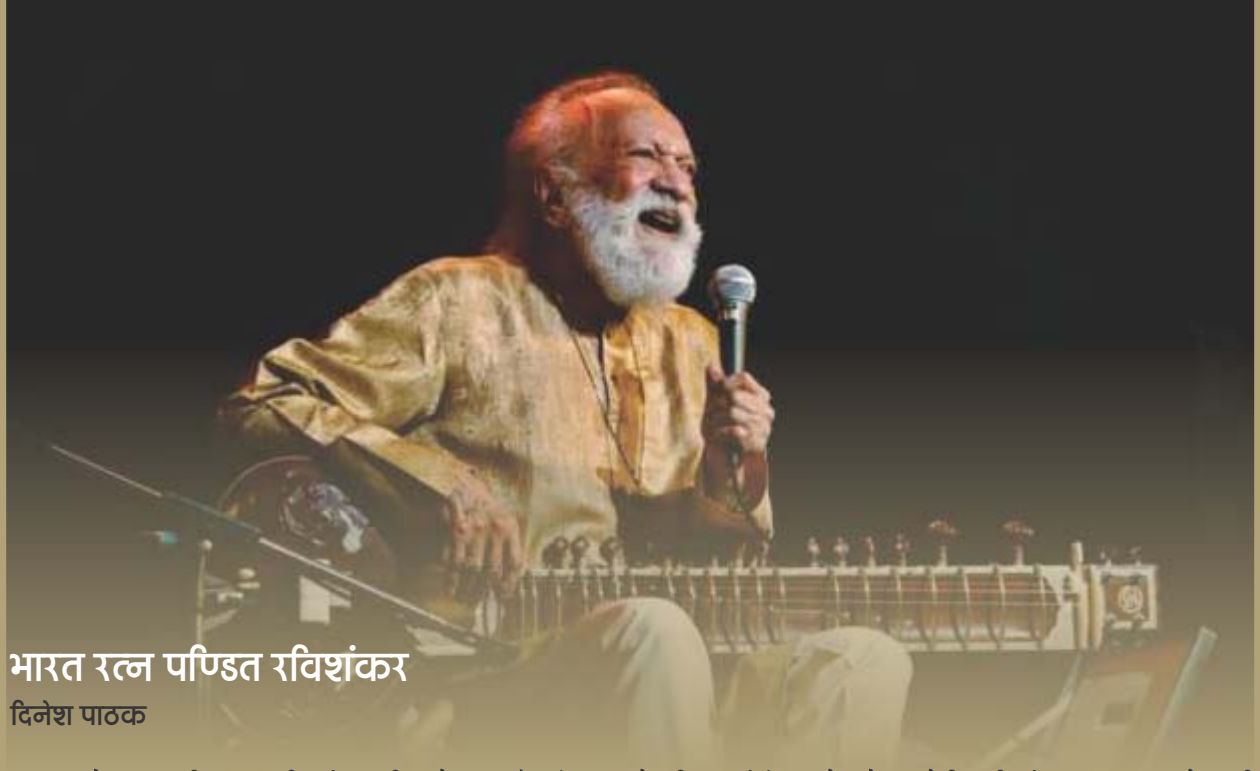

भारत रत्न पण्डित रविशंकर

दिनेश पाठक

वो 3 जनवरी 1989 की सर्द रात थी... मोहम्मद गौस के मकबरे की परछाई के आगोश में धुंध में लिपटी हुई सुर सम्राट तानसेन की समाधि, मानो तारों भरे आकाश से छिटकते सृष्टि संगीत को आत्मसात् कर रही हो... क्यारियों में महकते सुर्ख गुलाबों और ओस में नहाई हरी दूब के विस्तृत मैदान के किनारे पंक्तिबद्ध खड़े विशाल दरख़्तों की गम्भीर खामोशी के मध्य नीरव रात्रि के हृदय से प्रस्फुटित हो रहे थे सितार के शाश्वत सुर... जो प्रारम्भ हुए थे, आसन्न मध्यरात्रि में राग हेमन्त के कोमल स्पर्श से और सुबह का धुंधलका होते-होते समापन की ओर अग्रसर थे भैरवी की शान्ति के साथ... सितार के पर्दों पर मचलती उंगलियाँ थीं सितार के उस जादूगर की जिसे सम्पूर्ण विश्व सितार सम्राट पंडित रविशंकर के नाम से पुकारता है... तानसेन समारोह की उस रात पण्डित रविशंकर के सितार का जादू सुनने वालों के सर चढ़कर बोल रहा था... लेकिन निर्लिप्त भाव से पंडित रविशंकर कह रहे थे... दरअसल ऐसे स्थानों का खुद-ब-खुद एक जादू होता है, जिससे प्रस्तुति देते समय रोमांच की अनुभूति होती है, इसे साधने का प्रयत्न करना होता है... शायद कोई मिसाल नहीं दी जा सकती इस महान् कलाकार की विनम्रता की...

संगीत हो या जीवन पद्धति सितार सम्राट पंडित रविशंकर ने जो कुछ किया खुलकर किया कहीं कोई छिपाव दुराव नहीं रहा। एक ओर जहाँ उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को परम्परात्मक दायरों से निकालकर प्रयोगात्मकता के सहारे विश्व संगीत क्षितिज पर स्थापित किया वहीं दूसरी ओर व्यक्तिगत जीवन में मानवीय दुर्बलताओं को स्वीकार कर सम्बन्धों को रिश्तों की चादर भी उढ़ाई... कदाचित् यही वे सब बातें थी जिन्होंने इस महान् कलाकार की कला और व्यक्तिगत जीवन को भी संगीत एवं समाज की रूढ़ियों के सरमायेदारों की कटु आलोचना का शिकार बनाया। यहाँ तक कि उनकी सांगीतिक समग्रता के सम्मान स्वरूप उन्हें `भारत रत्न' से सम्मानित किए जाने पर, इसे उनके द्वारा भारत छोड़कर विदेश में बस जाने की धमकी का परिणाम बताया गया। इस पराकाष्ठा के उपरान्त भी तीन-तीन बार विश्व स्तरीय `ग्रैमी पुरस्कार' से नवाजे गए इस अप्रतिम संगीतज्ञ ने आलोचकों को सदैव क्षमा किया और कहा कि, `पुरस्कार मिलते हैं और भुला

दिए जाते हैं, दूसरे कई कलाकारों को उससे कष्ट भी होता है, लेकिन यह सब वास्तव में मेरे काम के ऊपर कोई प्रभाव नहीं डालता है।

शुरुआती दिनों की याद कर पंडित जी कह उठते थे, `अब तो ज़िन्दगी सितार के तारों के इर्द-गिर्द ही सिमट कर रह गई है लेकिन एक जमाना था, जब मैं दादा उदय शंकर के डांस ग्रुप का एक बेहतरीन नर्तक था। 10 से 14 वर्ष की आयु तक मैंने दादा उदय शंकर की मंडली के साथ सारी दुनिया में नृत्य कार्यक्रम दिए। हमारे दादा के ग्रुप ने उस जमाने में सारी दुनिया में हलचल मचा रखी थी, `उदय शंकर डांस ट्रूप' तीस और चालीस के दशक में दुनिया का सबसे नामी नृत्य समूह था। दादा उस जमाने में एक टॉप स्टार थे उनके साथ रहने से हमें उस वक्त भी हर देश में उच्चतम दर्जे की बेहतरीन सुविधाएँ मिलती थीं। हम फाइव स्टार होटल में ठहरते थे। हमारे चारों ओर रंगीन दुनिया थी और मेरी गिनती ग्रुप के अच्छे नर्तकों में होती थी। उन दिनों मैं साथ ही साथ चित्रकारी भी किया करता था, कविता भी लिखता था, साहित्य में भी रुचि रखता था यानी मेरी प्रतिभा इतने सारे क्षेत्रों में प्रस्फुटित हो रही थी कि मेरे लिए यह तय कर पाना कठिन हो गया था कि मैं कला के किस वर्ग को अपना जीवनक्षेत्र बनाऊँ। उन्हीं दिनों मानों दैवीय अनुकम्पा हुई और फरवरी 1935 में बाबा अलाउद्दीन खाँ यूरोप में हमारे ग्रुप में एक सरोद संगतकार के रूप में शामिल हुए। मैं उस समय लगभग 14-15 साल का रहा हूँगा, उन्हीं दिनों बाबा ने संगीत में मेरी रुचि देखकर मुझे अपना शागिर्द बनाया और लगभग एक साल तक हमारे साथ रहकर वह वापस हिंदुस्तान चले गए। लेकिन बाबा के सहचर्य ने जैसे मुझे रास्ता सुझा दिया और मैंने यह फैसला कर लिया कि मुझे सिर्फ संगीतज्ञ ही बनना है। सन् 1937-38 में लड़ाई यानि दूसरा विश्व युद्ध चालू हो गया, जिसकी वजह से सारी दुनिया और विशेष तौर पर यूरोप में सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया। हमारे भाई साहब, दादा उदयशंकर ने फैसला किया कि वे भारत लौट कर आएँगे और यहाँ एक सांस्कृतिक प्रशिक्षण केन्द्र खोलेंगे और नृत्य कला का प्रशिक्षण देंगे। मैंने कुछ दिन दादा के नृत्य प्रशिक्षण केन्द्र में काम किया और उसके बाद दादा से अनुमति लेकर बाबा अलाउद्दीन खाँ के पास मध्यप्रदेश के छोटे से कस्बे मैहर पहुँच गया जहाँ बाबा का गुरुकुल चलता था।

बाबा अलाउद्दीन खाँ के सानिध्य में उनके पुत्र अली अकबर खाँ और पुत्री अन्नपूर्णा देवी के साथ सितार, सरोद और सुरबहार पर संगीत साधना का कठिनतम अभ्यास करते हुए रविशंकर ने अपनी ज़िन्दगी के सात - आठ महत्वपूर्ण वर्ष, मध्यप्रदेश के उस छोटे से कस्बे मैहर में बिताए। गुरुकुल में अत्यधिक अनुशासित दिनचर्या के अन्तर्गत 12 घंटे का रियाज और बाकी समय गुरुकुल के दूसरे काम शामिल हुआ करते थे, कई बार रियाज़ करते-करते उंगलियाँ भी घायल हो जाती थीं। एक बार बाबा के भीषण क्रोध के कारण रवि ने वापस लौटने का मन भी बना लिया, लेकिन अली अकबर और बाबा की पत्नी जिन्हें रवि भी माँ कहते थे ने उन्हें रोक लिया। इसी दौरान् सन् 1939 में रविशंकर ने बाबा के गुरुकुल के बाहर अपनी पहली सार्वजनिक प्रस्तुति इलाहाबाद म्यूजिक कान्फ्रेन्स में दी।

पंडित रविशंकर के सितार वादन में ताल - लय का वर्चस्व तथा परम्परा और आधुनिकता का जो संगम दृष्टिगोचर होता है वह कहीं ना कहीं जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उनके बड़े भाई पंडित उदय शंकर के नृत्य समूह में उनके एक कुशल बाल नर्तक के रूप में शामिल होकर विश्व के विस्तृत भ्रमण के कारण ही विकसित हो सका।

पंडित जी बताते थे कि, `शुरू-शुरू में मैने वाद्यवृंद, नृत्य, संगीत और कठपुतली कला तक का मिश्रण करके कई नए प्रयोग किए थे। सन् 1945 से 1947 तक बैले भी काफी किए। कांग्रेसी बैकग्राउंड वाले इंडियन नेशनल थियेटर के लिए `डिस्कवरी ऑफ इंडिया' किया था फिर `स्प्रिट ऑफ इंडिया', `इम्मॉर्टल इंडिया' और 100 से भी ज्यादा संगीत कलाकारों को लेकर `मैलोडी एंड रिदम' भी उन्हीं दिनों किया था। क्योंकि उन दिनों संचार और संवाद के साधन आजकल जैसे नहीं थे इसलिए उस जमाने के हिन्दुस्तान के कम लोग ही हमारी यह प्रस्तुतियाँ देख पाए।' बाद में रविशंकर मुम्बई आ गए और `इपटा' यानी `इंडियन पीपुल्स थिएटर' के मेम्बर बन गए। यहाँ रहते हुए भी उन्होंने बैले `इम्मॉर्टल इंडिया' में संगीत दिया। उन्हीं दिनों उन्हें दो फिल्मों ख्वाजा अहमद अब्बास की, `धरती के लाल' और चेतन आनन्द की `नीचा नगर' में भी संगीत देने का मौका मिला। प्रख्यात फिल्म निर्देशक सत्यजीत राय की अमर कृतियाँ `पाथेर पांचाली', `अपूर संसार'

और `अपराजितो' का संगीत देते समय पंडित जी ने धुनों में पाश्चात्य वाद्य यंत्रों के साथ कुछ विशेष प्रयोग भी किए। बाद में `इप्टा' छोड़कर उन्होंने अपना खुद का बैले समूह बनाया और उसका नाम रखा `इंडिया रेजोनेंस आर्टिस्ट'। पंडितजी यादों को टटोलते हुए बताते थे, `आजादी मिलने के बाद सन् 1948 तक हमारी मेहनत और बाबा के आशीर्वाद से हमारा नाम काफी स्थापित हो गया था। हमारा नाम इसलिए भी चर्चा में आया था क्योंकि हम उस जमाने के ऐसे पहले युवा संगीतज्ञ थे जो संगीतकारों के पारम्परिक परिवार से वास्ता नहीं रखता था और जिसने इसके बावजूद भी संगीत को गम्भीरता से लेकर गरिमापूर्ण प्रस्तुतियाँ दी थीं।' ओशो ने एक स्थान पर लिखा है कि रविशंकर अपने समकालीन संगीतज्ञों की तुलना में अधिक सराहे गए क्योंकि वे कला के साथ प्रयोग करने में कभी हिचकिचाहट महसूस नहीं करते थे और सभी पूर्वाग्रहों को ताक पर रखकर नव्यता के आग्रह को स्वीकार कर लेते थे।

सन् 1949 में ऑल इंडिया रेडियो के आमंत्रण पर रविशंकर ने वहाँ संगीत निर्देशक के रूप में काम शुरू किया। इस दौरान उन्होंने एक से बढ़कर एक वाद्यवृंद रचनाएँ की और इकबाल के सुप्रसिद्ध देश भक्ति गीत `सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ता हमारा' की वह धुन तैयार की जिसे आज तक सारा देश गा रहा है और हमेशा गाता रहेगा। रेडियो की नौकरी के दौरान ही पंडित रविशंकर ने यह विशेष तौर पर महसूस किया कि पाश्चात्य वाद्य यंत्र खासतौर पर वायलिन, भारतीय संगीत को सुन्दरता से प्रस्तुत कर सकते हैं। रविशंकर के संगीत कार्यक्रमों में श्रोताओं को शास्त्रीय और पश्चिमी संगीत का अनूठा मिलन रस के सागर में गहराई तक डुबो देता था। लगभग उन्हीं दिनों भारत की यात्रा पर आए मशहूर वायलिन वादक यहूदी मैनुहिन ने रविशंकर को सुनने के बाद कहा कि उनके सितार को सुनने के अनुभव को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता है। दोनों की मुलाकात गहरी मित्रता में बदल गई। यहूदी मैनुहिन ने रविशंकर से अपनी मुलाकात को `कोलम्बस की नई दुनिया की खोज' की उपमा दी थी। 1955 में यहूदी मैनुहिन ने रविशंकर को न्यूयॉर्क में `फोर्ड फाउंडेशन' द्वारा प्रायोजित भारतीय शास्त्रीय संगीत के एक विशेष कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमन्त्रित किया। किसी कारणवश रविशंकर इस समारोह में शामिल नहीं हो सके लेकिन उन्होंने अपने गुरु भाई, अली अकबर खाँ को इस कार्यक्रम में भेज दिया। कार्यक्रम की शानदार सफलता से प्रेरित होकर रविशंकर ने ऑल इंडिया रेडियो की नौकरी से इस्तीफा देकर, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी और ब्रिटेन के सांगीतिक दौरे का प्रोग्राम बनाया और देश के साथ ही विदेशों में भी स्वतन्त्र रूप से कार्यक्रम प्रस्तुत करना प्रारम्भ कर दिए। 1956 में लंदन में रविशंकर ने अपने पहले एल्बम `थ्री रागाज' यानी तीन राग को जारी किया। यूनाइटेड नेशन की दसवीं वर्षगाँठ का हिस्सा बनने के साथ ही `यूनेस्को म्यूजिक फेस्टिवल' में उन्होंने यहूदी मैनूहीन के साथ जुगलबंदी प्रस्तुत की। इसी के साथ यूरोप और ऑस्ट्रेलिया के दौरे के अन्तर्गत रविशंकर विदेशी फिल्म में संगीत निर्देशन करने वाले पहले भारतीय संगीतकार भी कहलाये। यहूदी मैनूहीन के साथ उन्होंने सितार और वायलिन की जुगलबंदी पर आधारित एल्बम `वेस्ट मीट्स ईस्ट' तैयार किया जिसे `ग्रैमी अवार्ड फॉर बेस्ट चेम्बर म्यूजिक परफॉर्मेंस' मिला। 1962 में उन्होंने फेस्टिवल ऑफ इंडिया के अन्तर्गत ख्यात संगीतज्ञ जुबिन मेहता के साथ `राग माला कंसर्ट' में प्रस्तुति दी। हॉलीवुड की फिल्म चार्ली और रिचर्ड एटनबरो की विश्व विख्यात फिल्म `गाँधी के अलावा हिन्दी फिल्म अनुराधा, गोदान और मीरा का संगीत निर्देशन भी किया। इस प्रकार रविशंकर का नाम और काम दोनों ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया।

पंडित रविशंकर की इस सूझबूझ के कारण ही उन्होंने भारतीय संगीत की गरिमा और भव्यता विदेशों में स्थापित करने के साथ ही विदेशी श्रोताओं में उसकी गहराई को समझने वाला नजरिया भी विकसित किया और दो-तीन साल के अन्दर ही उनकी एक खास पहचान विदेशों में बन गई। इससे पहले किसी दूसरे भारतीय संगीतज्ञ के साथ ऐसा नहीं हुआ था। भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्वपटल पर स्थापित करने में निश्चित रूप से रविशंकर की विभिन्न जुगलबंदियों, उनके द्वारा बनाए गए तिलकश्याम, नटभैरव और बैरागी जैसे अनेकों नए रागों, भारतीय और पश्चिमी संगीत के फ्यूजन और नई सोच के साथ जुड़े रहने की प्रवृत्ति का विशेष योगदान रहा। उन दिनों पंडित रविशंकर का सितार विदेशों में भारतीय संगीत का पर्याय बन गया था जिनका संगीत से वास्ता नहीं था वह भी उनका नाम जरूर जानने लगे थे वर्ष

2008 में 88 साल की उम्र में पंडित रविशंकर ने अपनी पुत्री अनुष्का के साथ यूरोप का विशेष दौरा किया और उस कंसर्ट के बाद यह तय किया कि वे अब विदेश दौरे नहीं करेंगे, उनकी उंगलियाँ सितार के पर्दों पर मचलते हुए तो नहीं थकी थीं, लेकिन उनका शरीर अब उन्हें लम्बे सफर में सहयोग नहीं कर पा रहा था। लेकिन एक बार फिर उनके मन और शरीर पर आत्मा की विजय हुई और 2011 में ब्रिटेन में पंडित रविशंकर ने पुनः एक सफल प्रस्तुति दी। हमेशा की तरह उनके आलोचक कह उठे कि रविशंकर, इस उम्र में भी धन के लोभ के कारण मंच को तिलांजलि नहीं दे रहे हैं। पंडित रविशंकर के साथ इस तरह की आलोचना का संयोग सम्पूर्ण जीवन में रहा था और उन्होंने उस पर कभी प्रतिक्रिया नहीं दी थी लेकिन इस बार उन्होंने आलोचना पर शाँत रहने की बजाय जवाब दिया, हाँ मैं इस जीवन में कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि सन्तुष्टि मुझे समाप्त कर देगी... मैं निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहता हूं स्वर, सितार और संगीत के साथ नए-नए प्रयोग करते हुए।'

वाकई पंडित रविशंकर जैसे प्रयोगधर्मी कलाकार को क्या सदियाँ भी भुला सकेंगी ? संगीत में विशिष्ट रचनात्मक योगदान के लिए पंडित रविशंकर को भारत सरकार ने वर्ष 1999 में भारत रत्न से सम्मानित किया था, उन्हें रेमन मैग्सेसे अवार्ड, पद्मभूषण तथा पद्मविभूषण से भी सम्मानित किया गया था। विभिन्न विश्वविद्यालयों ने डॉक्टरेट की 14 मानद उपाधियाँ उन्हें प्रदान की थी। संगीत के क्षेत्र में पंडित जी को तीन ग्रैमी पुरस्कार मिले थे। वर्ष 1986 से 1992 तक वे राज्यसभा के मानद सदस्य भी रहे।

4 नवम्बर 2012 को कैलिफोर्निया में पंडित जी ने बेटी अनुष्का के साथ सितार पर जीवन की भैरवी बजाकर मानो जीवनसभा विराम की घोषणा कर दी... अन्ततः 12 दिसम्बर 2012 को सितार के तार पर तैरती वह ज़ादुई उंगलियाँ ठहर गईं... नौ दशक लम्बी सभा... सम्पूर्ण संसार में विस्तारित सभा... ना भुलाई जा सकने वाली सभा... वह सभा जिसके मर्म में थी सितार सम्राट की स्वीकारोक्ति...

``संगीत सिर्फ संगीत होता है उसका अच्छा या बुरा होना असल में व्यक्ति अपनी आयु, अनुभव, ज्ञान और पृष्ठभूमि के आधार पर तय करता है। उसके कई रूप हैं गायन, वादन, भारतीय, पाश्चात्य... लेकिन मेरे लिए संगीत आत्मा की आवाज है, आत्मधुन है। जीवन के हर अनुभव को संगीत की दृष्टि से देखना मेरी कमजोरी रही है... जब मैं सितार के साथ होता हूँ तब मैं अपने आप के साथ भी नहीं होता...''

तलत अज़ीज़ - गायन

हैदराबाद में जन्में तलत अज़ीज़ प्रसिद्ध उर्दू लेखक एवं शायर अब्दुल अज़ीम् ख़ान एवं सजीदा आबिद के सुपुत्र हैं। आपने किराना घराना गायिकी की प्रारम्भिक शिक्षा उस्ताद समद खाँ, तत्पश्चात् उस्ताद फ़ैयाज़ अहमद खाँ साहब के सान्निध्य में और ग़ज़ल की शिक्षा मूर्धन्य् ग़ज़ल उस्ताद मेंहदी हसन से ग्रहण की। आपको उस्ताद मेंहदी हसन के साथ यू.एस., कनाडा के कला मंचों पर मंच सांझा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। आपने अपनी पहली एलबम `जगजीत सिंह प्रेसेंट्स तलत अज़ीज़' जारी की। तलत अज़ीज़ ने सुप्रसिद्ध संगीत निदेशक ख़य्याम साहब के लिए चलचित्र `उमराव जान' तथा `बाज़ार' में अपनी दिलकश आवाज़ का जादू बिखेरा। आपने प्रसिद्ध संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के लिए फ़िल्म `धुन' में मुख्य भूमिका अदा की एवं गाने तथा मेंहदी हसन के संग भजन भी गाया। आपने टी.वी. धारावाहिकों के लिए संगीत रचा तथा अभिनय भी किया है। पिछले चार दशकों से अपने जादुई आवाज़ से मंत्रमुग्ध करने वाले तलत अज़ीज़ ने देश-विदेश के अनेक प्रतिष्ठित मंचों पर प्रस्तुतियाँ दी हैं। बहु प्रतिभा सम्पन्न तलत अज़ीज़ के कई एल्बम्स जारी हुए हैं। आप सूफ़ी गायन में भी पारंगत हैं।

विद्याधर व्यास - गायन (सम्मानित)

1944 में मुम्बई में जन्मे पण्डित विद्याधर व्यास को छोटी उम्र से घर-परिवार में संगीत का वातावरण प्राप्त हुआ। पण्डित विद्याधर व्यास ने संगीत की आरम्भिक शिक्षा अपने पिता से ही प्राप्त की। पिता ने आपको शास्त्रीय संगीत के व्याकरण और मर्म से परिचित कराया। गायन में दक्षता हासिल करते हुए स्वयं आपके समानान्तर रूप से अपने ज्ञान को समृद्ध किया और संगीत का अध्ययन जारी रखा। मुम्बई विश्वविद्यालय से समाज विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मुम्बई से आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन संगीत में डॉक्टरेट उपाधि (संगीताचार्य) प्राप्त की। आपको सीनियर फैलोशिप भी प्राप्त हुई। पण्डित विद्याधर व्यास की प्रतिष्ठा तीन आयामों में परिलक्षित होती है, गुणी गायक, श्रेष्ठ शिक्षक एवं कुशल प्रशासक। 1960 में व्यास अकादमी ऑफ इण्डियन म्युजिक में अध्यापन शुरू किया। अकादमिक और प्रशासकीय उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए आपकी साधना और सांगीतिक यात्रा जारी रही। देश-विदेश के अनेक प्रतिष्ठित संगीत मंचों, महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में अपनी प्रस्तुति से सराहना अर्जित की। संगीत कला रत्न, संगीत भुवन भास्कर सम्मान, संगीत शिरोमणि, आचार्य बृहस्पति संगीत सेवा सम्मान, संगीत नाटक अकादमी नेशनल अवार्ड, पुट्टराज गवई अवार्ड आदि भी आपको प्राप्त हुए हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत जगत में सक्रिय उपस्थिति आज भी उतने ही आयामों में अत्यन्त ऊर्जस्व, सधी हुई तथा सीधे सम्प्रेषित होने वाली है।

मोइनुद्दीन खाँ - सारंगी

पद्मश्री से अलंकृत उस्ताद मोइनुद्दीन खाँ सुप्रसिद्ध, अनुभवी सारंगी वादक और शास्त्रीय संगीत कलाकार हैं। आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के 'जयपुर घराना' से सम्बन्ध रखते हैं। विलम्बित, द्रुत एवं लयकारी के साथ अस्थाई-आलाप-अंतरा को ओजस्वी पद्धति से प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं। खाँ साहब को संगीत की कला विरासत में मिली और आपने अपने पिता जाने-माने सारंगी वादक संगीत सम्राट उस्ताद महबूब खाँ से सात वर्ष की उम्र में सारंगी का प्रशिक्षण प्राप्त किया, आपको अपने दादाजी उस्ताद ख़्वाजा बख़्श से भी संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। मोइनुद्दीन खाँ ने दूरदर्शन और आकाशवाणी पर अनेक एकल प्रदर्शन दिये हैं, इसके अलावा फ्रांस, चेक गणराज्य, डेनमार्क, जर्मनी और अन्य यूरोपीय देशों में प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में भी प्रदर्शन किया है। आपने सुप्रसिद्ध कलाकारों के साथ संगत की हैं। कई विशिष्ट सम्मानों से विभूषित, मोइनुद्दीन खाँ गुरु-शिष्य परम्परा अनुसार अपने शिष्यों को सारंगी, वायलिन और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा देते आ रहे हैं। आप आकाशवाणी के टापग्रेड कलाकार हैं।

प्रेम कुमार मलिक - ध्रुपद गायन

सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायक पंडित बिदुर मलिक के पुत्र प्रेम कुमार मलिक, दरभंगा ध्रुपद संगीत घराना के बारहवीं पीढ़ी से हैं। आपको गौहरबानी एवं खण्डरबानी शैली का सबसे प्रतिष्ठित ध्रुपद गायक माना जाता है। मधुर, भावपूर्ण एवं ओजस्वी वाणी के धनी पंडित प्रेम कुमार मलिक ने ध्रुपद एवं पखावज की शिक्षा अपने दादा पंडित सुखदेव मलिक एवं पिता पंडित विदुर मलिक से प्राप्त की। अखिल भारतीय रेडियो संगीत प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक एवं अन्य सम्मानों से सम्मानित आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शास्त्रीय गायन संगीत में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के उच्च श्रेणी कलाकार, पंडित प्रेम मलिक ने देश-विदेश के कई कला मंचों तथा संगीत समारोहों में ध्रुपद गायन किया। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध ध्रुपद गायक प्रेम कुमार इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संगीत प्रोफेसर हैं। साथ ही 'पंडित विदुर मलिक ध्रुपद अकादमी' में शिक्षार्थियों को ध्रुपद की शिक्षा भी प्रदान कर रहे हैं।

रसिका अभिषेक गावड़े - गायन

रसिका गावड़े अल्पायु में ही संगीत की ओर आकर्षित हुई और उन्हें ग्वालियर घराने के वरिष्ठ गायक श्री विश्वनाथ गवानन्द का सान्निध्य प्राप्त हुआ। आपने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से पत्रोपाधि तथा संगीत कोविद् में प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक हासिल किया। देश के सुप्रसिद्ध कलावंत पण्डित सुनील मसुरकर ने रसिका की गायन प्रतिभा को सँवारा तथा ग्वालियर घराने की गायिकी की बारीकियों से रूबरू करवाया। आपको वरिष्ठ संगीतज्ञ श्री विजय गावड़े का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। अपने हुनर को विस्तार देते हुए रसिका ने सुगम संगीत, गज़ल, नाट्य संगीत, भाव गीत तथा चित्रपट संगीत के क्षेत्र में स्वतन्त्र पहचान बनायी है। आपको साहित्य सभा, इन्दौर एवं महाराष्ट्र समाज उज्जैन आदि द्वारा सम्मानित किया गया है। वर्तमान में वे सारेगामा म्यूजिक कॉलेज में प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं।

श्रुति अधिकारी एवं साथी - पंचनाद

पंचनाद भारतीय शास्त्रीय संगीत का मध्यप्रदेश का अनूठा वाद्य-वृन्द है। वाद्य-वृन्द में पाँच संगीतज्ञ महिलाएँ : संतूर वादिका-श्रुति अधिकारी, सितार वादिका-स्मिता वाजपेयी, सारंगी वादिका-गौरी बनर्जी सती, तबला वादिका-संगीता अग्निहोत्री और पखावज वादिका-महिमा उपाध्याय शामिल हैं। ये सभी संगीतज्ञ महिला सदस्याएँ संगीत के क्षेत्र में नये प्रयोग, नई रचना और निरन्तर नवाचार की अनुभूति अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से कराती हैं। प्राकृतिक तत्व अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश मिलकर 'पंचनाद' करते हैं। नाद पाँच महिला संगीतकार करती हैं। सभी जानते हैं मानव की आत्मा में संगीत विद्यमान है। प्रकृति से संगीत लेकर वाद्ययंत्रों के माध्यम से शान्ति के लिए संगीत की प्रस्तुति अद्भुत आभास कराती है। वाद्य-वृन्द की स्थापना सुप्रसिद्ध संतूर वादिका श्रुति अधिकारी ने की है। वाद्य-वृन्द की अनेक प्रस्तुतियाँ हुई हैं। वाद्य-वृन्द में वायोलिन और मृदंगम् वादक भारतीय शास्त्रीय संगीत और कर्नाटिक संगीत के अद्वितीय फ्यूजन से परिचित कराते हैं।

सागर मोरानकर - ध्रुपद गायन

सागर मोरानकर प्रतिभावान ध्रुपद गायक हैं। 1986 में चालीसगाँव (महाराष्ट्र) में जन्में सागर ने विद्यालयीन शिक्षा `होम फॉर द ब्लाइण्ड' विद्यालय, पुणे से प्राप्त की, तत्पश्चात् आपने संगीत सीखने का निर्णय लिया। गुरु-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत वर्ष 1998 से पंडित उदय भावलकर के सानिध्य में आप संगीत शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार एवं अन्य छात्रवृत्तियों से सम्मानित सागर ने देश के कई कला मंचों पर अपनी ध्रुपद कला का जादू बिखेर यश अर्जित किया है। ध्रुपद गायन कला के गहन अध्ययन के साथ-साथ आप संगीत की शिक्षा भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में सागर आई.टी.सी. संगीत रिसर्च अकादमी के स्कालर हैं।

मीता पंडित - गायन

पंडित लक्ष्मण कृष्णराव पंडित की पुत्री मीता पंडित हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रतिभाशाली कलाकार हैं। मधुर और प्रभावशाली वाणी, रागों के रचनात्मक पहलुओं की जटिल अद्भुत प्रस्तुतियों और कला प्रशंसकों के मध्य एक विशिष्ट पहचान के रूप में स्थापित मीता बीसवीं शताब्दी के उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के मूर्धन्य संगीतज्ञ पद्मभूषण पंडित कृष्णराव शंकर पंडित की पोती एवं शिष्या हैं। आकाशवाणी की उच्च श्रेणी की कलाकार मीता ने देश एवं विदेश में आयोजित अनेक प्रसिद्ध कला मंचों एवं उत्सवों में अपनी मनमोहक प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। युवा रत्न सम्मान तथा अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत मीता ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के दुनिया भर में विस्तार हेतु वर्ल्ड स्पेस सैटिलाइट रेडियो पर `स्वर श्रृंगार' नामक सिरीज़ एवं दूरदर्शन पर `सुबह सवेरे' कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। इन्दिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स की सलाहकार रह चुकी मीता ने `मास्टर्स ऑफ हिन्दुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक' परियोजना का नेतृत्व किया है। प्रसार भारती एवं पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन द्वारा वृत्तचित्र `मीता लिंकिंग ए ट्रेडीशन विथ टुडे' का निर्माण भी किया गया है।

लौकिया वालासी, स्टेला वालासी-ग्रीस : गायन-संतूरी (विश्व संगीत)

ग्रीस की लोकप्रिय युवा शास्त्रीय एवं पारम्परिक संगीतकार तथा गायिका लौकिया वालासी एवं स्टेला वालासी की गणना प्रमुख कलाकरों में होती है। कई कला मंचों एवं उत्सवों में अपने जादुई सुरों एवं संगीत का प्रदर्शन किया है। आप दोनों का वादन-गायन श्रोताओं का परिचय एक अनूठी संगीत कला से कराता है।

लौकिया वालासी ने मात्र पाँच वर्ष की आयु में संगीत की शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ की। आप शास्त्रीय, पारम्परिक संगीत तथा पियानो और बाइज़ैंटाइन संगीत में स्नातक हैं। लौकिया को संतूरी संगीत में मैसेडोनिया विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त करने का श्रेय प्राप्त है। संगीत के प्रति महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए यूनेस्को क्लब एवं अन्य महत्त्वपूर्ण सम्मानों से विभूषित लौकिया ने गायिका तथा संतूरी कलाकार के रूप में कई सुप्रसिद्ध ग्रीक एवं विदेशी कलाकारों के साथ देश-विदेश के कई कला उत्सवों में प्रस्तुतियाँ दी हैं।

स्टेला वालासी ने संगीत शिक्षा की स्नातक उपाधि एथेंस विभाग से प्राप्त की। आपने पियानो और बाइज़ैंटाइन संगीत का डिप्लोमा तथा पारम्परिक वाद्ययंत्र ज़िथर में भी स्नातक उपाधि प्राप्त की है। कई सम्मानों से अलंकृत स्टेला ने ग्रीस एवं विदेशों के कई प्रतिष्ठित कला सभाओं एवं मंचों पर अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं। आपको संगीत क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए थेस्सेलीयन्स यूरोप् फेडरेशन द्वारा सम्मानित किया है।

अब्दुल सलाम नौशाद - क्लेरोनेट

इंदौर के सांगीतिक परिवार में जन्में नौशाद ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने दादा एवं होल्कर राज दरबार के प्रसिद्ध कलाकार उस्ताद नत्थन खाँ से प्राप्त की। आपने जयपुर घराने के प्रसिद्ध सारंगी वादक उस्ताद मोईनुद्दीन खाँ साहब के मार्गदर्शन में अपने वादन को निखारा। इंदौर घराने का प्रतिनिधित्व करने वाले गायक पण्डित श्रीकृष्ण सावनेर के सानिध्य में अपने वादन को समृद्ध किया। आपके वादन में रागों की शुद्धता एवं रंजकता नज़र आती है। साथ ही अति विलम्बित लय से द्रुत लय तक का सफर सुनने वाले श्रोताओं को तृप्त करता है। कठिन तानों का अभ्यास, लयकारी, विशिष्ट तिहाइयाँ और सुन्दर आलाप आपके वादन की विशेषता हैं। आकाशवाणी के 'ए' ग्रेड कलाकार अब्दुल सलाम नौशाद ने कई संगीत सम्मेलनों में प्रस्तुतियाँ दी हैं। दूरदर्शन से आपके अनेक कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं। सुरसिंगार परिषद-मुम्बई द्वारा आपको सुरमणि की उपाधि प्रदान की गई है। नौशाद ने देश-विदेश के कई प्रतिष्ठित कार्यक्रमों में अपना वादन प्रस्तुत किया है।

अभिजीत सुखदाणे - ध्रुपद गायन

ध्रुपद गायक अभिजीत सुखदाणे का जन्म 7 जनवरी 1977 को ग्वालियर में हुआ। आपने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा श्री दिलीप वसन्त मोये तथा श्रीमति साधना गोरे के मार्गदर्शन में तानसेन संगीत महाविद्यालय से प्राप्त की। वर्ष 1993 में उस्ताद ज़िया फरीदउद्दीन डागर के प्रदर्शन से प्रभावित होकर आपने गुरु-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत उनसे ध्रुपद का प्रशिक्षण प्राप्त किया। ध्रुपद केन्द्र ग्वालियर के माध्यम से आप ध्रुपद गायिकी का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। देश के कई प्रतिष्ठित कला मंचों पर ध्रुपद गायन का जादू बिखेर चुके अभिजीत ने युवाओं को प्रोत्साहित किया और आपके शिष्य ध्रुपद गायन का प्रदर्शन कर गौरव प्राप्त कर रहे हैं।

उमयालपुरम के. सिवरमन - मृदंगम्

डॉ. उमयालपुरम के. सिवरमन का नाम मृदंगम् का पर्याय है। आपकी गणना भारत के मूर्धन्य कर्नाटिक एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीतज्ञों में होती है। लम्बी संगीत सेवा अवधि में आपको कई विश्वविख्यात शास्त्रीय संगीत एवं कर्नाटिक संगीत कलाकारों के साथ संगत का अवसर प्राप्त हुआ। डॉ. सिवरमन संत त्यागाराजा की शिष्य परम्परा से सम्बन्ध रखते हैं। तीन वर्ष की आयु में कंजीरा वादन करते हुए देखने पर पिताश्री ने आपको पाँच वर्ष की आयु में गुरुकुलवासम में प्रवेश दिलाया। आपने प्रख्यात गुरु अरूपथी नतेसा अय्यर, तंजावुर वैद्यनाथ अय्यर, पालघाट मणि अय्यर एवं कुम्बकोणन रंगू अय्यर के सानिध्य में मृदंगम् कला की शिक्षा ग्रहण की। दस वर्ष की आयु में आपने पहली प्रस्तुति दी। राष्ट्रपति द्वारा वर्ष 2010 में पहले मृदंगम् कलाकार के रूप में पद्मविभूषण के अलावा अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से आप अलंकृत हैं। डॉ. सिवरमन ने अपनी विशिष्ट शैली 'उमयालपुरम सिवरमन शैली' को स्थापित किया एवं इस कला में देश-विदेश के अनेक शिक्षार्थियों को मृदंगम् कला की तकनीक तथा बारीकियों से प्रशिक्षित किया। वर्तमान में आप मृदंगम् कला के प्रति प्रतिभावान युवाओं को प्रोत्साहित कर रहे हैं। मृदंगम् वादन कला के महत्वपूर्ण योगदान के साथ-साथ आपको 'फाइबर ग्लास मृदंग' की रचना एवं निर्माण का श्रेय भी प्राप्त है।

मोहन देशपाण्डे - गायन

मोहन देशपाण्डे प्रसिद्ध संगीतज्ञ तथा संगीत विश्लेषक हैं। आपका जन्म पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर से सम्बन्धित प्रतिष्ठित सांगीतिक परिवार में हुआ। आपने शास्त्रीय गायन की शिक्षा अपने पिता गायक तथा शिक्षक महामहोपाध्याय पंडित एस.बी. देशपाण्डे से प्राप्त की। मूलरूप से आपने ग्वालियर घराना शैली में संगीत की शिक्षा ग्रहण की थी परन्तु सुप्रसिद्ध पंडित कुमार गन्धर्व एवं उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ से प्रभावित होकर आपने अपनी एक विशिष्ट संगीत शैली विकसित की। रागदारी शैली में भारत, यू.एस. तथा कनाडा के कई कला मंचों पर अपनी जादुई कला का प्रदर्शन किया। आपने देश एवं विदेश के दर्शकों के बीच भारतीय शास्त्रीय शैली के महत्व एवं रुचि को बढ़ाने के लिए नए विचारों के प्रयोगों के साथ कई सफल प्रदर्शन किये। मोहन देशपाण्डे ने न्यू जर्सी के अनेक संगीतज्ञों के साथ मिलकर कार्यक्रम जैसे- कल्याणदर्शन, म्यूजिक ऑफ इंडिया आदि प्रस्तुत किए एवं सराहना बटोरी। पच्चीस वर्षों से आप विवेकानन्द विद्यापीठ में शास्त्रीय गायन की शिक्षा दे रहे हैं। आपको ऑल इंडिया रेडियो म्यूज़िकल प्रतियोगिता में प्रेसिडेंशियल अवार्ड से नवाजा गया है।

जयवन्त गायकवाड़ - पखावज

ग्वालियर में जन्में जयवन्त गायकवाड़ ने पखावज की प्रारम्भिक शिक्षा श्री यमुनेश कुमार नागर से और तत्पश्चात् नाथद्वारा जयपुर घराने के प्रसिद्ध पखावज वादक पण्डित श्री तोताराम शर्मा जी से प्राप्त की। आपको उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी, भोपाल द्वारा दुर्लभ शैली योजना के अन्तर्गत पखावज छात्रवृत्ति प्रदान की गई। आपने भारत भवन-भोपाल, मध्यप्रदेश संगीत समारोह-जबलपुर, संगीत नाटक अकादमी-नई दिल्ली, तानसेन संगीत समारोह-ग्वालियर, सी.सी.आर.टी. संगीत समारोह उदयपुर, 'क' महोत्सव-नागपुर, उत्तराधिकार, अनुश्रुति संगीत समारोह, ध्रुपद संगीत समारोह एवं अन्य समारोहों में एकल वादन तथा श्रेष्ठ कलाकारों के साथ पखावज पर सफल संगत की है। आकाशवाणी 'बी' हाई श्रेणी कलाकार जयवन्त वर्तमान में राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर में पखावज संगतकार के पद पर कार्यरत हैं।

सोनल शिवकुमार - गायन

ख़्याल गायिकी एवं भजन, ठुमरी, झूला, दादरा तथा मराठी लोकगीत गायन में पारंगत सोनल शिवकुमार ने पंडित प्रभाकर कारेकर से बारह वर्षों तक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में आप जयपुर अतरौली घराना की सुप्रसिद्ध श्रीमती माणिक भिड़े से हिन्दुस्तानी संगीत की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। कर्नाटक सरकार के प्रतिष्ठित डॉ. मल्लिकार्जुन मंसूर युवा पुरस्कार से सम्मानित सोनल, आल इंडिया रेडियो की 'बी' हाई श्रेणी की कलाकार हैं एवं आपने देश के अनेक प्रतिष्ठित कला मंचों एवं विदेश में अपनी गायन कला का प्रदर्शन कर यश बटोरा है। एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय, मुम्बई से संगीत में स्नातकोत्तर सोनल सदियों पुरानी हिन्दुस्तानी समृद्ध संगीत विरासत को युवाओं एवं अगली पीढ़ी के बीच विस्तार के लिए समर्पित हैं।

सुधाकर देवले - गायन

सुधाकर देवले को संगीत की प्रेरणा माँ श्रीमती लता देवले से मिली। बाद में ग्वालियर घराने की विशेष गायिकी टप्पा गायन का प्रशिक्षण श्री रघुनाथ बाग व गायन की उच्च शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पद्मश्री स्वर्गीय पण्डित जितेन्द्र अभिषेकी से गुरू-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत प्राप्त की। आपने ख्याल गायन के साथ-साथ ठुमरी, नाट्य संगीत एवं भजन में दक्ष हैं। आपको भारत सरकार और भूलाभाई मेमोरियल इंस्टीट्यूट से छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। आकाशवाणी और दूरदर्शन के नियमित कलाकार सुधाकर देवले ने देश के कई प्रसिद्ध संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं। आपने बारह वर्ष तक बहरीन में रहकर संगीत एवं नृत्य की शिक्षा दी। भारत के अलावा अमरीका, संयुक्त अरब अमीरात और खाड़ी के देशों की आपने कला यात्राएँ की हैं। 'टिप्स' कम्पनी द्वारा आपकी 'राम सुमिर' नामक सीडी जारी हुई है।

सलीम अल्लाहवाले एवं साथी - ताल सप्तक

सलीम अल्लाहवाले का जन्म देवास के संगीत परिवार में हुआ। तबला वादन की शिक्षा अपने पिता और गुरु श्री दद्दु खाँ से, तत्पश्चात् मामा उस्ताद अल्लादिया खाँ, उस्ताद फरीद हुसैन खाँ एवं उस्ताद साबीर हुसैन खाँ से प्राप्त की। तबला वादन की उच्च शिक्षा उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ साहब हासिल हुई। आप आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के 'ए' श्रेणी के तबला वादक है। आपको संगीत विशारद, मध्यप्रदेश कला गौरव अवार्ड, अभिनव कला सम्मान, ताल मणि सम्मान से नवाज़ा जा चुका है। आप गायन-वादन के साथ कथक में भी उच्च कोटि की संगत करते आ रहे हैं। आपने देश-विदेश के लगभग 500 से भी अधिक संगीत महोत्सवों में भाग लिया है तथा अनेक पुरस्कारों से आपको पुरस्कृत किया गया है। आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अनेक समाराहों में प्रसिद्ध कलाकारों के साथ आपने संगत की तथा एकल तबला वादन भी प्रस्तुत किया है। हाल ही में नॉर्थ अमेरिका के मेक्सिको में आयोजित 'भारत महोत्सव' में अपनी कला का प्रदर्शन कर लौटे हैं।

सियावस इमानी, पेड्रम खावर जामिनी, आमिर खैरी-
ईरान : तार, टुम्बक (विश्व संगीत)

पेड्रम खावर जामिनी, पर्शियन शास्त्रीय संगीत के मुख्य वाद्ययंत्र टुम्बक के विश्व के अग्रणी कलाकार हैं। आपको अत्यन्त प्रगतिशील संगीत कलाकार के रूप में पहचाना जाता है। आपने टुम्बक की शिक्षा उस्ताद कामयार मोहब्बत एवं बहमन रज़ाबी से प्राप्त की। यू.एस., जर्मनी एवं कई दूसरे देशों में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके खावर जामिनी ने प्रसिद्ध पर्शियन शास्त्रीय संगीतकारों तथा विश्व के नामी संगीतकारों के साथ मिलकर अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं।

आमिर खैरी ने वर्ष 1990 में तेहरान में जन्म लिया, आपने टुम्बक की प्रारम्भिक शिक्षा बहनाम् काज़ी तथा हुसैन पौरबूतलेन के सानिध्य में प्राप्त की। इसके पश्चात् आमिर ने टुम्बक का प्रशिक्षण ईरान के प्रसिद्ध टुम्बक उस्तादों बहमन रज़ाबी, पेड्रम खावर जामिनी एवं पेजमन ह्दीद के मार्गदर्शन में प्राप्त किया।

सियावस इमानी ने ईरानी शास्त्रीय संगीत एवं तार वाद्ययंत्र की शिक्षा मोहम्मद रेज़ा लोत्फी, अर्शद तहमसबी, हौषंग ज़ारिफ एवं उस्ताद ज़ेदोल्लाह से ग्रहण की। प्रसिद्ध संतूर वादक, अरिया मोहाफिज़ के साथ मिलकर 'बाग़-ए-नग़मेहा म्यूज़िक इंस्टीट्यूट' का संचालन करते हैं तथा इस शास्त्रीय संगीत कला के विस्तार को समर्पित हैं।

अजय पोहनकर - गायन

पण्डित अजय पोहनकर ने ग्वालियर और किराना घराने की गायिकी की शिक्षा अपनी माँ यशस्वी गायिका डॉ. श्रीमती सुशीला पोहनकर से ग्रहण की। संगीत और अंग्रेजी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त पण्डित अजय ने आकाशवाणी और दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रमों के साथ-साथ देश के सभी प्रतिष्ठित आयोजनों में हिस्सेदारी की है। कल्पनाशीलता, स्वर माधुर्य और शास्त्रीय शुद्धता आपके गायन की विशेषता है। संगीत जगत के पारसमणि कहलाये जाने वाले कलाकार पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर, उस्ताद अमीर खाँ साहेब और हीराबाई बड़ोदेकर के साथ आपने प्रस्तुतियाँ दी हैं। मुम्बई विश्वविद्यालय, संगीत विभाग में प्राध्यापक, देश-विदेश की प्रतिष्ठित संगीत सभाओं में शिरकत तथा पुरस्कृत भी हुए हैं। संगीत की विभिन्न कंपनियों द्वारा आपके गायन की एल.पी. रिकार्ड, ऑडियो कैसेट्स और सी.डी. जारी की गई हैं।

नित्यानंद हल्दीपुरकर - बाँसुरी

नित्यानन्द हल्दीपुरकर देश के अग्रणी बाँसुरी वादक हैं। पद्मभूषण श्रीमती अन्नपूर्णा देवी के वरिष्ठ शिष्य नित्यानन्द को बाल्यकाल से ही संगीत का पारिवारिक परिवेश प्राप्त हुआ। आपको पिता एवं प्रथम गुरु सुप्रसिद्ध बाँसुरी सम्राट श्री पन्नालाल घोष के वरिष्ठ शिष्य स्वर्गीय निरंजन हल्दीपुर से कला की तकनीक तथा बाँसुरी के माधुर्य का ज्ञान प्राप्त हुआ। बीस वर्षों तक श्री चिदानंद नगरकर एवं पण्डित देवेन्द्र मुण्डेश्वर जैसी विभूतियों के शिष्य रहे। आपका अभ्यास सेनिया घराना के उस्ताद अली अकबर खाँ, पण्डित रविशंकर, स्व. श्री पन्नालाल घोष एवं स्व. निखिल बनर्जी जैसे प्रतिष्ठित कलाकारों की पद्धति पर आधारित है। सार्क उत्सव, अपना उत्सव सहित अनेक प्रतिष्ठित संगीत सभाओं में आपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं। विदेश में भी आपकी रागों की ख्याति फैली हुई है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम में भी आपने प्रस्तुतियाँ दी है। आपका संगीत मगनासाउण्ड एवं लाइनएज जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा जारी किया गया है। आपको कई सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

नरेश मल्होत्रा - गायन

मूर्धन्य उस्ताद अमीर खाँ की इन्दौर घराना की गौरवशाली परम्परा से ओत प्रोत, नरेश मल्होत्रा अपने मननशील, भावपूर्ण एवं आनन्दमय संगीत के लिए जाने जाते हैं। इन्दौर घराना गायिकी की तीसरी पीढ़ी के अत्यन्त प्रतिभा सम्पन्न प्रतिनिधि नरेश मल्होत्रा ने गुरु-शिष्य परम्परा के तहत ध्रुपद की शिक्षा पंडित तेजपाल सिंह के संरक्षण में प्राप्त की। दो दशक से अधिक अवधि के गहन अभ्यास ने आपको इन्दौर गायिकी की जटिलता एवं बारीकियों पर महारत प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। ख़्याल तथा तराना आपकी विशेषता हैं। आप भक्तिमय संगीत विशेष रूप से भजन भी गाते हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के 'ए' श्रेणी के कलाकार, आई.सी.सी.आर. के सूचीबद्ध कलाकार, नरेश मल्होत्रा को कई सम्मानों से विभूषित किया गया है। आपने देश के कई महत्वपूर्ण कला मंचों पर अपनी गायन कला का प्रदर्शन कर कला प्रेमियों एवं समीक्षों से सराहना बटोरी है।

ली फेंगयुन-चीन : गुचिन (विश्व संगीत)

सुश्री ली फेंगयुन एक प्रसिद्ध गुचिन वादक हैं। गुचिन एक चीनी संगीत वाद्ययंत्र है जिसका उपयोग चीन की संगीत सभाओ में प्राचीन काल से होता आ रहा है। पारम्परिक रूप से यह संगीत वाद्ययंत्र विद्वानों और साहित्यकारों के बीच पसंदीदा रहा है। ली फेंगयुन ने प्रोफेसर चेन ज़्होंग के सानिध्य में गुचिन वादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा इसकी बारीकियाँ बीजिंग सेंट्रल कंज़रवेटरी ऑफ म्यूज़िक के श्री ली क्षियांग्टिंग के मार्गदर्शन में आत्मसात् की। आपने जापान, सिंगापुर रूस, बेलारूस, हाँगकाँग, मलेशिया, पोलैंड, पुर्तगाल एवं अमेरिका में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। तियांजीन कंज़रवेटरी ऑफ म्यूज़िक की प्रोफेसर सुश्री ली फेंगयुन, एसोसिएशन ऑफ चाइनीज़ म्यूज़िशियन की सदस्य एवं गुचिन प्लेयर्स एसोसिएशन की अध्यक्ष हैं।

महेश दत्त पाण्डे - गायन

ग्वालियर के संगीत अनुरागी परिवार में जन्में महेश दत्त पाण्डे की संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने दादा स्व. पण्डित रामकृष्ण पाण्डेय के सान्निध्य में हुई। तत्पश्चात् शंकर गन्धर्व संगीत महाविद्यालय के वरिष्ठ गुरु सीताराम जी शरण एवं विशेष शिक्षा ग्वालियर घराने के मूर्धन्य गायक पद्मभूषण डॉ. कृष्णराव शंकर पण्डित जी से ग्रहण की। एम.ए. कंठ संगीत, स्वर्ण पदक इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ और संगीत प्रभाकर तबला प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से प्राप्त की। नागपुर, भोपाल इटारसी, सोलापुर, आगरा, मथुरा इन्दौर आदि शहरों में आयोजित संगीत समारोहों में शिरकत तथा ख्यातलब्ध कलाकारों के साथ हारमोनियम संगति भी की है। आपने शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय में दस वर्षों तक संगीत शिक्षण किया तथा आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिकारी के पद पर भी अपनी सेवाएँ दी हैं।

रामचन्द्र भागवत-वायलिन

देश के वायलिन वादकों में रामचन्द्र भागवत का एक विशेष स्थान है। संगीत परिवार में जन्में भागवत की प्रारम्भिक शिक्षा पिता स्व. पण्डित कृष्ण विनायक भागवत के सान्निध्य में हुई जो स्वयं प्रसिद्ध वायलिन वादक थे। साथ ही आपको स्व. पण्डित गजानन राव जोशी, स्व. पण्डित मुकुन्द विष्णु कालविंट, डॉ. राजाभाऊ सोनटक्के , स्व. विश्वनाथ राव जोशी, पण्डित बाला साहेब पूछवाले आदि गुरुजनों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। पण्डित विमलेन्दु मुखर्जी से तन्त्रकारी अंग की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ म्यूजिक की उपाधि प्राप्त रामचन्द्र सपाट ताने, झाले के विभिन्न प्रकार तथा सुन्दर लयकारी के विशेषज्ञ हैं। आरम्भ-भोपाल, वसन्तराव देशपाण्डे स्मृति समारोह-नागपुर, घराना सम्मेलन-वाराणसी, गीतम्-बेहरामपुर, फैयाजखान समारोह-आगरा, गंगा महोत्सव-वाराणसी सहित देश के प्रमुख संगीत समारोहों में आपने शिरकत की है।

अपूर्वा गोखले एवं पल्लवी जोशी - गायन

अपूर्वा गोखले ग्वालियर घराना की प्रसिद्ध युवा शास्त्रीय संगीत गायिका हैं। आपको संगीत कला के उत्कृष्ट गुण अपने दादा स्वर्गीय ज्ञानाचार्य पंडित गजानन राव एवं परदादा पंडित अंतुबुवा जोशी से विरासत में प्राप्त हुए। चाचा गुरु पंडित मधुकर जोशी के सानिध्य में पच्चीस वर्ष तक आपने संगीत की साधना की। आपको नामी संगीतज्ञ विद्वानों से मार्गदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में स्नातकोत्तर उपाधि तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत शासन से फैलोशिप से सम्मानित, अपूर्वा आकाशवाणी की `ए' श्रेणी की कलाकार हैं एवं आपको कई और पुरस्कारों से विभूषित किया है।

पल्लवी जोशी एक युवा, ऊर्जावान तथा प्रतिभावान शास्त्रीय संगीत कलाकार है। प्रतिष्ठित शास्त्रीय संगीत परिवार में जन्मी पल्लवी को संगीत विरासत में मिला है, आप इस परिवार की पाँचवीं पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं। आपने ग्वालियर, जयपुर तथा आगरा घराना शैली में पारंगत अपने दादा पंडित गजाननबुवा जोशी से संगीत की शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ की। इसके पश्चात पल्लवी ने अपने चाचा पंडित मधुकर जोशी के मार्गदर्शन में पच्चीस वर्ष तक तथा डॉ. सुचेता बिड़कर, पिता श्री मनोहर जोशी एवं पंडित अरुण कशालकर से संगीत कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया। संगीत में स्नातकोत्तर उपाधि, भारत शासन द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन में छात्रवृत्ति प्राप्त पल्लवी ने कई एकल तथा बहन श्रीमति अपूर्वा गोखले के साथ देश-विदेश के अनेक प्रसिद्ध कला मंचों एवं उत्सवों में प्रस्तुतियाँ देकर कला मर्मज्ञों को मंत्रमुग्ध किया है।

मीर गैसेनबावर, अमित मीनाखेम, ऐरन ज़मीर- इज़राईल :
नेय, परकशन, ऊद (विश्व संगीत)

एरन ज़मिर का सम्बन्ध इज़राईल से है। आप एक उत्कृष्ट संगीतकार एवं ऊद वादक हैं। 25 वर्ष की आयु में आप ऊद वाद्ययंत्र एवं अरबी संगीत से प्रभावित हुए। इससे पहले आप एक जाज़ गिटारिस्ट थे। एरन ने प्रारम्भ में संगीत की शिक्षा सुप्रसिद्ध याइर दलाल से ग्रहण की तथा इसके पश्चात् आपने यरूशलम संगीत अकादमी के अरबी विभाग के प्रोफेसर तैसीर इलयास के मार्गदर्शन में संगीत का शिक्षण प्राप्त किया। आप अपनी प्रस्तुतियों में अपना मुख्य संगीत वाद्ययंत्र ऊद का उपयोग करते हैं तथा आपके द्वारा ऊद एवं इलेक्ट्रिक गिटार को एक रूप देकर बनाया हुआ वाद्ययंत्र `साइरन' भी प्रयोग करते है। यह प्रदर्शनों में एक रोमांचक और आधुनिक परिपेक्ष्य जोड़ता है। वर्ष 2011 में एरन की पहली एलबम `इन गुड स्पिरिट' तथा वर्ष 2014 में दूसरी स्टुडियो एल्बम `कम्प्लीमेंट्री अपोज़िट' जारी हुई। आपने देश विदेश के अनेकों कला उत्सवों में एकल तथा अपनी तिकड़ी के साथ मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी हैं। एरन ज़ामिर एवं उनके साथी मीर गैसेनबावर और अमित मीनाखेम की तिकड़ी मौलिक एवं समसामयिक मध्यपूर्वी संगीत प्रस्तुत करते हैं।

जान्हवी फनसालकर - ध्रुपद गायन

जान्हवी ने मात्र पाँच वर्ष की अल्पायु में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा डॉ. उषा पारखी से नागपुर में प्राप्त की। संगीत कला के प्रति अथाह प्रेम एवं समर्पण आपको पुणे ले गया जहाँ आपने ग्वालियर घराना के प्रसिद्ध गुरु स्वर्गीय विदुषी वीणा सहस्त्रबुद्धे से प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 2014 में आपको ध्रुपद परम्परा के ख्यातिलब्ध गुन्देचा बन्धु के मार्गदर्शन में शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जान्हवी ने देश के कई ध्रुपद उत्सवों में प्रदर्शन कर कला प्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया है। आपने निरामय उत्सव, भारत भवन, भोपाल में अमिता सिन्हा महापात्र के साथ जुगलबंदी भी की है। वर्तमान में जान्हवी ध्रुपद संस्थान, भोपाल में ध्रुपद की सहायक प्रशिक्षक के रूप में तथा ध्रुपद संकुला, बेंगलुरु में प्रशिक्षक के रूप में सेवाएँ दे रही हैं।

कौशिकी चक्रवर्ती - गायन

कौशिकी चक्रवर्ती पटियाला घराना की एक उत्कृष्ट युवा भारतीय शास्त्रीय संगीत गायिका हैं। कौशिकी ने संगीत की शिक्षा अपनी माता श्रीमती चन्दना चक्रवर्ती एवं अपने पिता पद्मश्री शास्त्रीय संगीत गायक श्री अजय चक्रवर्ती के सानिध्य में प्रारम्भ की। आई.टी.सी. संगीत रिसर्च अकादमी से `ए-टॉप' श्रेणी में स्नातक, कौशिकी ख़्याल एवं ठुमरी की बेमिसाल कलाकार हैं। उन्हें न केवल ख़्याल और ठुमरी गायन में विशेषज्ञता हासिल है बल्कि उन्होंने श्री बालामुरली कृष्ण से दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत भी सीखा है। कौशिकी चक्रवर्ती के गायिकी कौशल को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, उन्हें `जदू भट्ट' पुरस्कार, `आउटस्टैंडिंग यंग पर्सन' अवार्ड, बी.बी.सी. अवार्ड एवं कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। आपने कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय उत्सवों और सम्मेलनों में प्रदर्शन कर कला क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। आपने सोल, वॉइस, एस्पिरेशन (एस.वी.ए.) नामक न्यास का गठन किया जो कि समूचे हिन्दुस्तानी संगीत के प्रोत्साहन एवं संरक्षण को समर्पित है। कौशिकी द्वारा ऑडियो सीडी एलबम `द बेस्ट ऑफ कौशिकी चक्रवर्ती' भी जारी किया गया है। आपकी कुछ शास्त्रीय ऑडियो रिकॉर्डिंग- पूर्वी राग में ध्रुपद आलाप, ध्रुपद, बागेश्री राग में ख़्याल (तीन ताल में), बागेश्री राग में ख़्याल (एकताल) और स्वराष्ट्रम राग में वरनम भी जारी हुई हैं।

नरेन्द्रनाथ धर - सरोद

कोलकाता में जन्में पण्डित नरेन्द्रनाथ धर को प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता ख्यात सरोद वादक स्व. श्री नेमीचन्द्र धर से प्राप्त हुई। आपको श्री समरेन्द्रनाथ सिकन्दर तथा स्व. पण्डित राधिका मोहन मोइत्रा सदृश्य शीर्ष सरोद वादकों के साथ-साथ उस्ताद अमजद अली खाँ से भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के 'ए-ग्रेड' कलाकार नरेन्द्रनाथ धर ने देश-विदेश के प्रतिष्ठित मंचों से प्रस्तुतियाँ दी हैं। सुसंगत आलाप, इकहरी तानें तथा चमत्कृतिपूर्ण झाला के साथ-साथ लय पर अधिकार युक्त वादन आपकी विशेषता है। आकाशवाणी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार, संस्कृति विभाग, भारत सरकार की राष्ट्रीय छात्रवृत्ति और प्रतिष्ठित नौशाद अवार्ड (वाद्य संगीत के क्षेत्र में आपके महत्वपूर्ण योगदान हेतु उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रदत्त), उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा अकादमी अवार्ड आदि आपको प्राप्त हुए हैं। एच.एम.व्ही. द्वारा आपकी कैसेट जारी की गई है।

संजुक्ता दास - गायन

ख़्याल, दादरा एवं ठुमरी गायन की प्रतिभाशाली कलाकार संजुक्ता दास ने वर्ष 1998 में ख़्याल गायिकी की बाल कलाकार के रूप में शास्त्रीय संगीत जगत में कदम रखा। आपको बेगम परवीन सुल्ताना, उस्ताद रज़ा अली खाँ, पंडित संदीपन समाजपति, विदुषी पूर्णिमा चौधरी, विदुषी डालिया राऊत एवं विदुषी मंदिरा लहरी से शास्त्रीय संगीत तथा अर्द्ध-शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राष्ट्रीय छात्रवृत्ति से सम्मानित संजुक्ता दास ने देश के कई प्रतिष्ठित कला मंचों पर अपनी गायन कला का प्रदर्शन कर कला मर्मज्ञों के बीच एक विशिष्ट स्थान बनाया है। ठुमरी एवं दादरा की आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की 'बी' उच्च श्रेणी की कलाकार संजुक्ता को राष्ट्रपति सम्मान तथा अन्य सम्मानों से सम्मानित किया गया है। जे.डी. बिड़ला महाविद्यालय, कोलकाता में अर्थशास्त्र की सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत संजुक्ता पश्चिम बंगाल राज्य संगीत अकादमी में संगीत शिक्षक तथा दूरदर्शन केन्द्र में एंकर के रूप में भी अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

अली अहमद खाँ - सारंगी

रीवा के प्रतिष्ठित सांगीतिक परिवार में जन्में अली अहमद खाँ ने अपने पिता उस्ताद नसीर खाँ कलावंत से सारंगी वादन की आरम्भिक शिक्षा हासिल की। संगीत में आपने प्रभाकर, प्रवीण विशारद, निपुण की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की है। आप आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के नियमित कलाकार हैं। आपने गायन-वादन व नृत्य की विधाओं में देश के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ संगत की है। आपको अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जिनमें सुरसिंगार, सुरमणि अवार्ड प्रमुख हैं। इसके अलावा अखिल भारतीय युवा महोत्सव प्रतियोगिता, संगीत नाटक अकादमी तथा प्रयाग संगीत सभा समिति में प्रथम स्थान प्राप्त हो चुका है। आपके एकल सारंगी वादन की देश के अनेक शहरों में प्रस्तुतियाँ हो चुकी हैं।

वर्तमान में आप शासकीय संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) में सारंगी वादक के पद पर कार्यरत हैं।

प्रज्ज्वल शिर्के - गायन

प्रज्ज्वल शिर्के ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा गुरु श्री रविन्द्रनाथ मंडल व श्रीमती साधना गोरे से प्राप्त की। आप गायन में कोविद् उपाधि प्राप्त हैं। अनेक गायन प्रतियोगिताओं में भाग लेकर आप पुरस्कृत हुए हैं जिनमें राष्ट्रीय युवा उत्सव, राष्ट्रीय संगीत प्रतियोगिता, कलर्स चैनल द्वारा आयोजित 'इंडियाज़ गॉट टैलेंट', लता मंगेशकर सुगम संगीत गायन प्रतियोगिता, जी.टी.वी. 'सा रे गा मा पा' आदि शामिल हैं। आपको बालश्री अवार्ड भी प्राप्त हुआ। अनेक कार्यक्रमों में आपने प्रस्तुतियाँ दी हैं और सम्मानित हुए हैं।

हेलिना सूटर्स, बियेतरेज-बेल्जियम : गायन-गिटार (विश्व संगीत)

बेल्जियन सोपरानों गायिका हेलेना सूटर्स जीवनभर पारम्परिक संगीत और लोक गीतों के प्रति मोहित एवं समर्पित रही हैं। उन्होंने शास्त्रीय संगीत गायक के रूप में अपना कैरियर आरम्भ किया। आपने विभिन्न संगीत परियोजनाओं में विभिन्न शैलियों और संस्कृतियों का मिश्रण प्रस्तुत किया है। हेलिना की साथी सुश्री बीयेतरेज वेंकरशेवर प्रतिभाशाली शास्त्रीय गिटारिस्ट हैं, दक्षिण अमेरिकी संगीत में आपको विशेषज्ञता प्राप्त है। पारम्परिक लोक संगीत ने सदियों से पश्चिम शास्त्रीय संगीत रचनाकारों को प्रेरणा दी है। बेल्जियन युगल की विशेषता है कि उनकी वाणी तथा संगीत कला प्रेमियों को यूरोपियन देशों एवं उनकी संगीत परम्परा एवं संस्कृति से परिचय कराता है।

जयश्री सबागुंजी - गायन

जयश्री सवागुंजी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन एवं सुगम संगीत की कलाकार हैं। आपको संगीत का प्रशिक्षण किराना घराने के महान् गायक पिता स्व. पण्डित बी.वी. कडलास्कर जी से प्राप्त हुआ। संगीत विशारद एवं संगीत विद्वत् की उपाधि प्राप्त जयश्री आकाशवाणी की 'बी-हाई' ग्रेड कलाकार हैं। आपको कर्नाटक राज्य संगीत एवं नृत्य अकादमी की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। अनेक पुरस्कार से सम्मानित जयश्री कोमल कंठ की धनी हैं।

सुजाता गुरव - गायन

किराना घराना परम्परा की समर्पित एवं उत्कृष्ट हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायिका सुजाता गुरव का जन्म सांगीतिक परिवार में हुआ। मधुर वाणी, चटक तान एवं मुर्कों में कुशल सुजाता वचना, दासवाणी, अभंगवाणी, ठुमरी एवं नाट्य संगीत में अपने अद्भुत कौशल के लिए जानी जाती हैं। अल्पायु में शास्त्रीय संगीत से प्रभावित होकर आपने किराना घराने की शास्त्रीय संगीत की शिक्षा स्व. उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब के वरिष्ठ शिष्य अपने पिता गुरु स्व. पंडित संगमेश्वर गुरव के मार्गदर्शन में प्राप्त की। सुजाता वर्तमान में अपने भाई पंडित कैवल्य कुमार गुरव की शिष्या हैं। कर्नाटक विश्वविद्यालय से संगीत में स्नातकोत्तर सुजाता को संगीत कला क्षेत्र में अमूल्य योग्यदान के लिए कई सम्मानों से सम्मानित किया गया है। देश के कई नामी कला मंचों पर मनोरम प्रस्तुतियाँ दे चुकीं सुजाता वर्तमान में कर्नाटक आर्ट्स कॉलेज, धारवाड़ के संगीत विभाग में अतिथि विद्वान के रूप में सेवाएँ दे रही हैं।

मीता नाग - सितार

सुप्रसिद्ध सितार वादक पंडित मनीलाल नाग की पुत्री एवं संगीत आचार्य गोकुल नाग की पौत्री मीता नाग का सम्बन्ध तीन सौ वर्ष पुराने विष्णुपुर घराना, बंगाल से है। आप अपने परिवार की छठवीं पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं। मीता ने केवल चार वर्ष की आयु में संगीत की शिक्षा अपनी माँ के मार्गदर्शन में ग्रहण करना प्रारम्भ की। तत्पश्चात् संगीत का प्रशिक्षण अपने पिता के सानिध्य में प्राप्त किया। वर्ष 1979 में अन्तर्राष्ट्रीय बाल दिवस के अवसर पर आपने अपना पहला सितार वादन कला का प्रदर्शन मात्र दस वर्ष की आयु में किया। मीता को भारत शासन के जूनियर नेशनल टेलेंट सर्च अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। मीता ने एकल तथा अपने पिता के साथ भारत एवं यू.एस.ए., कनाडा, जापान एवं यूरोप के कई शहरों में महत्वपूर्ण कला मंचों पर अपनी मोहक प्रस्तुतियाँ दे कला मर्मज्ञों से यश अर्जित किया। जूनियर टेलेंट सर्च छात्रवृत्ति एवं मानव संसाधन विकास, भारत शासन से जूनियर फैलोशिप अवार्ड से सम्मानित मीता ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत कला को बढ़ावा देने के लिए अपने दादा की स्मृति में 'गोकुल नाग मेमोरियल फाउण्डेशन' की स्थापना की है।

हरिकथा एवं मीलाद शरीफ़, शहनाई वादन, परम्परा

तानसेन समारोह की सांगीतिक यात्रा 9 दशक पूरे कर शताब्दी के अंतिम दशक में प्रवेश कर चुकी है। समारोह से जुड़ी अनन्यतम गतिविधि के रूप में समारोह के शुभारम्भ दिवस पर प्रातः विख्यात संगीतकार तानसेन साहब की समाधि पर हरिकथा एवं मीलाद का आयोजन किया जाता है। यह वर्षों से तानसेन समारोह की महत्वपूर्ण गतिविधि रही है। परम्परानुसार हरिकथा ढोलीबुवा महाराज द्वारा एवं मीलाद शरीफ़ मौलाना साहब द्वारा एवं शहनाई वादन की परम्परा का निर्वहन किया जाता है।

हरिकथा एवं मीलाद शरीफ़, शहनाई वादन, परम्परा
2018

वादी संवादी

वादी-संवादी तानसेन समारोह की नियमित गतिविधि के रूप में स्थापित है। पिछले वर्षों में संगीत की पारम्परिक सभाओं के साथ-साथ विमर्श का क्रम निरन्तरता में आयोजित किया जाता रहा है। संगीत समारोह की समग्रता में विमर्श एक अनूठी कड़ी है। इस अनुष्ठान में देश के संगीत मनीषी घराने की सांगीतिक विशिष्टताओं के साथ-साथ संगीत के विभिन्न पक्षों पर, स्वयं की संगीत साधना और अवदान से कला रसिकों को अभिभूत करते रहे हैं। यह प्रयास सफल रहा और पिछले तानसेन समारोहों में यह अनुषांगिक गतिविधि बहुत सराही भी गई है। हम आभारी हैं कि वादी-संवादी की इस महनीय यात्रा में संगीत मनीषी और सुधी रसिकजन निरन्तर सहभागी बने रहे हैं। इस वर्ष सितार पर शुभेन्दु राव का तथा ध्रुपद पर उमाकांत गुन्देचा एवं अनंत रमाकांत गुन्देचा का व्याख्यान होगा।

सोदाहरण व्याख्यान

19 दिसम्बर 2019, **शुभेन्दु राव**-सितार

20 दिसम्बर 2019, उमाकांत गुन्देचा एवं अनंत रमाकांत गुन्देचा-ध्रुपद

सायं 4 से 6 बजे तक
राजा मानसिंह तोमर संगीत कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर

प्रणति

भारत रत्न पंडित रविशंकर के 100वें जन्मवर्ष के अवसर पर

छायाचित्र प्रदर्शनी

17 से 20 दिसम्बर, 2019

तानसेन समारोह स्थल

प्रतिदिन प्रातः 8 से सायं 8 बजे तक

तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम
2019

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए
जिला प्रशासन एवं नगर निगम ग्वालियर,
के सहयोग से
उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ संगीत एवं कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल का प्रतिष्ठा आयोजन

स्थानीय संपर्क
तानसेन कला वीथिका- पड़ाव, ग्वालियर
0751-2372398, 0755-2553782 - uakska@yahoo.com